गाँवां रो साहित्य

भाग पहलड़ो

[पूर्वार्द्ध खण्ड]

संग्रहकर्ता
गिरधारीदान

श्री करणी प्रकाशन
गंगाशहर (बीकानेर)

भूमिका

विचारक डॉ. छगनलाल मोहता

पश्चिमी राजस्थान के अधिकतर लोग गांवों में अन्न-जल की अभावयुक्त परिस्थितियों में बसते हैं। उनका जीवन जमीन से जुड़ा हुआ है। मुक्त हवा, खुला आकाश और रेतीले धोरों के वातावरण को कभी सर्दी की मौसम मौत की तरह ठंडा कर देती है तो कभी ग्रीष्म का प्रचंड सूर्य अपनी तेजी से सबको झुलसाने लगता है। इन दोनों अतियों के बीच में सौभाग्य से जब अच्छी वर्षा और बादलों का प्रादुर्भाव होता है तो वातावरण हरा-भरा और स्निग्ध हो जाता है। धरती पर तृण-घास व मोटे अनाज से भरे खेत इस भूखण्ड को नया जीवन प्रदान करते हैं। परन्तु वर्षा प्रायः अनिश्चित रहती है और दूसरे-तीसरे वर्ष अकाल की भयंकर विपत्ति का केवल आभास ही नहीं होता किन्तु वास्तव में उसकी पूरी भयंकरता को भोगना पड़ता है। इन परिस्थितियों में जीवन-संघर्ष करने व जीवित रहने वालों का जो विशेष प्रकार का मानस बना है वह उनकी बोलियों के अखाणों व मुहावरों आदि में अपने पूरे अनुभव को व्यक्त करता है।

हमारे ग्रामीण भाई-बहिन साक्षर कम होते हुए भी एक विशेष अर्थ में अशिक्षित नहीं हैं अर्थात् शिक्षित ही हैं।

निरक्षर होते हुए भी जीवन के अनुभवों को पचा लेने व मौखिक वाणी द्वारा प्रकट कर देने की कुशलता-प्राप्त व्यक्तियों को अशिक्षित नहीं कह सकते। इस प्रकार की शिक्षा के साथ साक्षरता का योग होने से इस शिक्षा में और अधिक सम्पन्नता आती है।

भाई गिरधारीलाल जी प्रौढ़ शिक्षा, सामाजिक शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा के अनुभवी व्यक्ति हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने हमारे ग्रामीण जीवन के परिवेश में प्रचलित कविता, मुहावरों और कहावतों का ऐसा सुनिर्वाचित संग्रह किया है जो केवल ग्रामीण ही नहीं किन्तु आसपास के उपनगरों व नगरों में बसने वालों को भी अपने परम्परागत प्राप्त अनुभवमूलक ज्ञान का साक्षात्कार कराता है। प्रत्येक उक्ति के साथ उसका सरल अर्थ भी दे दिया गया है। आशा है कि जिनके लिए यह संकलन प्रकाशित हुआ है, उनको इससे लाभ होगा और इस अंचल के प्रौढ़ शिक्षा संबंधी आंदोलन को इस प्रकार की सामग्री से शक्ति व समर्थन प्राप्त होगा।

—*छगन मोहता*

समर्पण

प्रौढ़ शिक्षा की ज्ञान-गंगा

के भगीरथ

श्री अनिल बोर्दिया

को

सादर समर्पित

—लेखक

प्राक्कथन

आ पोथी बीकानेर प्रौढ़-शिक्षण समिति रै हुकम मुजब शिक्षा प्रसार केन्द्रां में भणीजणियां भायां वास्ते लिखी है। इये कारण सूं ईं बीकाणै रै गांवां में बोल्या जाय तथा गांव वाळां रै समझ में आ ज्याय वां शब्दां नैं ही काम में लेणे री घणी कोशिश करीजी है। इये रै साथै-साथै आ कोशिश भी करीजी है कि गांवां री बोली इसी होवै, जकी राजस्थान रै सगळा जिलां तथा भारत रै हिन्दी-भाषी सगळा ही प्रान्तां रै गांवां में बसणियां रै समझ में आ ज्याय और वानै ईं पोथी सूं क्यूं लाभ पहुंचे।

राजस्थान में मेवाती, हाड़ौती, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, मालाणी, मारवाड़ी तथा बागड़ी आदि कई तरह री बोल्यां बोलीजै है। वां में सूं कोई एक बोली लेयर जदि कोई

पोथी लिखीजै तो बा दूसरी बोली वाळा रै समझ में आछी तरह को आवैनी ।

इये वास्ते म्हारी सगळा भण्यां-गुण्यां भाया हूं आ विणती है कि राजस्थानी बोली इसी होणी जोइजै जकी राजस्थान में वसणियां सगळा ही भाँयाँ रै समझ में आ-ज्याय और वीं हूँ लाभ उठा सकै ।

हूं ईं वात नै मंजूर करूं के हूं कि इये पोथी री बोली भण्यां-गुण्यां भायां री परख में खरी को उतरैनी । इये रो कारण ओ है कि न तो हूं ही इतरो भणीजेड़ो हूँ कि खरी बोली नै पकड़ सकूं । तथा न हो हालतांई राज-स्थानी बोली किसी होसी, इयेरो कोई खास निचोड़ म्हारै देखणै में आयो ।

सारी ऊमर देहाती भायाँ रै साथै गुजारणै रै कारण घणो असर बांरी बोली रो ही पड्यो । इये कारण हूँ गांवां रा मिनख जोयां आपरी बोली में बोलता रहवै है वींया ही आ पोथी लिखीजेड़ी है । जठै तांई हूँ समझ-सक्यो हूं वठै तांई तो मनै ओ पक्को भरोसो है कि गाँवां रै भाया नै तो आ पोथी चोखी ही लागसी; भलांई वै राजस्थान रै किणी ही जिले में वस्ता होवै । पण भण्यां-गुण्यां तथा ऊंची सूज-वूझ वाळां मिनखां री नजर में आ

को आवैनी । फेर भी मनै ओ पक्को भरोसो है कि मण्यां-गुण्यां भाई भी म्हारो ओ पहलड़ो ही काम समझर मनै माफी बगसा देसी और आगै रै वास्ते सही रास्तो भी दिखाणै री महरबानी करता रहसी ।

हूं बीकानेर प्रौढ-शिक्षण समिति रो घणो अभारी हूं कि वीं मनै गांवां रै भायां वास्ते वांरै ही कामरी पोथी लिखणै रो मोको दियो । मोको ही को दियो नी समिति नै रुपया-पीसा हूं ही म्हारो घणो मदद करी । इयै कारण समिति रै सगळा सदस्यां नै तथा खास कर पूजनीय डा० श्री छगनलाल जी मोहता, श्री उपध्यानचन्द्र जी कोचर, एवं विद्वान डा. महावीर प्रसाद जी दाधीच रो हूं घणो न घणो आभारी हूं जिकां मेरे जिस्यै गांवां में फिरणियै मिनख नै भी याद करयो और लिखण मणींजण रो काम सोंप्यो ।

लिखणै रै काम में हूं अणभणियां प्रौढां री पांत में ही हूं । इयै कारण हूं ही बीकानेर प्रौढ शिक्षण समिति नै आपरो करतब समझर मनै नो लिखणै रे काम में आगै बढाणं सारू ओ लिखणै रो काम देयर आपरो पूरो-पूरो करतब निभायो । इयै वास्ते हूं समिति रै सगळा ही सदस्यां नै घणो-घणो धनवाद देऊं हूं और आ उम्मेद करूं हूं कि समिति आगै भी म्हारो होसलो और घणो बढाती रहसी ।

हूं ठा. रामसिंह जी बागोड़ सुपुत्र श्री भैरूंसिंह जी गांव घोळेरा निवासी रो भी कम अभारी को हूं नी। कारण आपनै इये पोथी नै छपाणे में म्हारी घणी हूं घणी मदद करी और आगै भी आपरी मदद मिलती रहसी आ आशा बंधाई। भगवान इस्या शिक्षा-प्रेमी मिनखांरो उणती दिनो-दिन करै। म्हारी भगवान हूं आही विणती है।

ग्राम-साहित्य (ले० श्री रामनरेश त्रिपाठी) एवं राजस्थानी लोक-साहित्य (सा. म. श्री नानूराम संस्कर्ता) नामी पोथ्यां हूं मनै घणो हूं घणी मदद मिली। हूं आ रै विद्वान लेखकां रो घणो अहसाणमंद हूं।

श्री रामनरेश जी त्रिपाठी आपरी पुस्तक "ग्राम साहित्य" री भूमिका में लिख्यो है कि कहावतां रो भंडार तो अपरम्पार समुद्र जिस्यो है। आ बात सवा सोळा आना सही है। आपणी इये पोथी में ईं चोखळै में बोलीजण वाळी कहावतां कोई १३०० रै आसरै छपी है। मंनै पूरो भरोसो है कि गांवां रो-साहित्य भाग दूसरै में १००० हूं कम ओर कहावतां को छपै नो। फेर भी नींवड़ को आवै नी। कारण गांवा रा माई वात-वात में कहावतां तथा ओखाणां नै काम में लेवता रहवै है। बांरी एक भी वात आपानै इसी को मिलै नी जकी में कहावतां तथा ओखाण को होवै नी।

इये हूं पतो चालै है कि कहावतां री संख्या अपरम्पार समुद्र जिसी है।

हूं श्री वीरेन्द्रकुमारजी सकसेना री भी घणो असारी हूं। कारण आपने आपरै छापाखाने में ई पोथी नै सगल्यां पोथ्यां हूं पहलो छपाणै री हिमायत करी। और गांव री बोली हूं अणजाण होतां थकां भी ई नै सही रूप में छपीजण में घणी मदद करी।

— गिरधारीदास

किसाना री मेह रे बारे में जानकारी
(मान्यताएं)

हमारे देश रो मुख्य धंदो खेती करनो है। अठे १०० में सू ८० हूं घणा भायां रे तो खेती रो ही आधार है। वाने आपरे रहणो-सहणो और समाज रे साथ बर्ताव करने रे अणभव रे साथे-साथे मेह और खेती रे बारे में भी घणो अणभव है, जो आज हूं ही नहीं पिछली अणगिणती री सदियां हूं ही है।

मेह खेती रो एक बहुत बड़ो साधन है। साधन ही नहीं बोने खेती रो जीवन ही मान लियो जाय तो कोई भूठी बात को है नो। इये कारण हूं ही अठे रा खेतीखड़ां रो ध्यान मेह सम्बन्धी जानकारी कानो घणो रह्यो। वां अणभव पर अणभव कर र नखतरां और राशियां में सूरज और चांद रे आणे हूं जमीन रे हवा रे घेरे पर जो प्रभाव पड़े है वींरो ओर ऋतुआं में हवा रो चाल हूं जो परिणाम होवे है वींरो भी गहराई हूं अणभव कर्यो।

आ जानकारी खेतीखड़ा में कद हूं है। इंरो सही

समय तो बताणो घणो मुश्किल है। पुराणे जमाने में जद इये देश री बोलचाल री भाषा संस्कृत रही है तब आ जानकारी संस्कृत भाषा रे श्लोकां में रचेड़ी हो। इये कारण खेती-खड़ा में आंरो हो प्रचार रह्यो होसी।

वराहमिहिर (५०५ ई. के लगभग) री बृहत्संहिता से पतो चाले है कि पुराणे जमाने में गर्ग, पराशर, ओर वात्स्य आदि मुनियों को मेह रे बारे में घणी जानकारी हो ओर बांरी लिखेड़ी पोथ्यां भी ही। पण वह पोथ्यां अब मिले कोनी। अठे बृहत्संहिता रा थोड़ा श्लोक दिया जावे हैः—

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावट कालस्य चान्न मायत्तम्।
यस्मादतः परीक्ष्य प्रावटकालः प्रयत्नेन ॥

अन्न ही जगत रो जीवण है ओर ओ मेह रे आसरे है। इये कारण हू उपाय कर र मेह रे समयरी जांच करणो चाहिए।

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानी निबद्धानि तानि दृष्टेदम।
क्रियते गर्ग पराशर काश्यप वात्स्यादि रचितानि ॥

गर्ग, पराशर, काश्यप ओर वात्स्य आदि मुनियों ने मेह रा जो लक्षण लिख्या है; बाने देखर आ पोथी लिखो है।

केचिद्वदन्ति कार्तिक शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः
न तु तन्मतं वहूना गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ॥

कोई-कोई कवै है कि काती रे उजाळे पाख न लांघर मेह रे गर्भ रा दिन आवै है। इये कारण हूं गर्ग आदि मुनियां रा विचार बताऊं हूं।

मार्गशिर शुक्लपक्ष प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरेषाढाम ।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणाम लक्षणं ज्ञेयम ॥

मिगसर रे उजाले पाख री एकम हूँ जिके दिन चन्द्रमा पूर्वाषाढ नखतर में होवै है, उणी दिन हूं सारे गर्भों रा लक्षण समझना चाइजे।

मेह रो भी गर्भ पड़ै है, आ बात इये समय र विज्ञान रे लिये एक नई बात है। पर इये पर बृहत्संहिता में विस्तार हूं लिख्यो है। उणो में से थोड़ा सा श्लोक आगे हूं लिख्या है:—

यन्न क्षत्र मुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत स चन्द्रवशात ।
पञ्चनवते दिन शेत तत्रैव प्रसव मायाति ॥

चन्द्रमा रे जिण नखतर में आणे से बादल में गर्भ होवै है। चन्द्रमा के वश से १९५ दिना में उण गर्भ रो

जन्म होवै है।

सित पक्ष भवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसंभवा रात्रौ
नक्तं प्रभवश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम

जिको गर्भ उजाळे पाख में पड़ै है, वह अन्धेरे पाख में, जिको अन्धारे पाख में पड़ै है, वह उजाले पाख में जिको दिन में पड़ै है वह रात में, जिको रात में पड़ै है वो दिन रे किणी भाग में और जिको संज्या में पड़ै है वींरो जन्म संज्या में ही होवै है।

मृगशीर्षाद्या गर्भा मन्द फलाः पौष शुक्ल जाताश्च
पौषस्य कृष्ण पक्षेण निर्दिशेच्छ्रावणस्य सितम।

मिगसर रे शुरू में और पो रे उजाळै पाख रा गर्भ मामूली फल देणवाळा होवै है। पो रे उजाळै पाख मे पड़्यै गर्भ रो फल सावण रे उजाळे पाख में बताणो चाइजै।

माघसितोत्था गर्भाः श्रावणकृष्णे प्रसूति मायान्ति
माघस्य कृष्ण पक्षेण निर्दिशेत् भाद्रपद शुक्लम

माह मास रे उजाळै पाख रो गर्भ सावण रे अंधारे पाख में और माह रे अंधारे पाख रो गर्भ भादवै रे उजाळै पाख में जन्म देवै है।

फाल्गुनशुक्ल समुत्था भाद्रपदस्यसिते विनिर्देश्याः ।
तस्यैव कृष्ण पक्षोद्या वास्तु ये तेऽश्वयुक शुक्ले ॥

फागण मास रे उजाळे पाख रो गर्भ भादवे अंधारे पाख में ओर अंधारे पाख रे गर्भ रो जन्म आसोज रे उजाळे पाख में बताणो जोईजे ।

चैत्रसित पक्ष जाताः कृष्णेऽश्व युजस्य वारिदा गर्भा ।
चैत्रासित संभूताः कार्तिक शुक्लेऽभि वर्षन्ति ॥

चैत रे उजाळै पाख रो गर्भ आसोज रे अंधारे पाख में जळ देवै है और चैत रै अंधारे पाख रो काती रे अंधारे पाख में वर्षा करै है—

पौपे समार्गशीर्षे सन्ध्या रागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः ।
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषेऽति हिमपातः ॥

मिगसर ऑर पो में संज्या री लाली लोयां चक्करदार बादल होवै तो मिगसर में घणी ठंड ओर पो में पाळो पड़ने से गर्भ पक्को को होवै नी ।

माघे प्रबलो वायुस्तुपारकुलुशद्युती रविशशाङ्कौ ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोर स्त्योदयो धन्यौ ॥

माह रै महीने में जदि जोररी हवा चाले, सूरज-चांद

री किरणां (तुषार) रे समान मलीन चमकवाली और घणी ठंडी होवै तो बादलां रै साथे सूरज रो उगणो और छिपणो जरूरी है।

भद्रपदा द्वयविश्वाम्बुदैव पैतामहेष्वथर्क्षेषु ।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति ॥

पूर्व भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद, पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ और रोहिणी नखतरों में वढेड़ा गर्भ घणो पाणी वरसावै।

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वाति मघासंयुतः शुभो गर्भः ।
पुष्णाति बहून्दिवसान हन्त्युत्पातैर्हतास्त्रिविधैः ॥

शतभिषा, आश्लेषा, आर्द्रा, स्वाति और मघा मिले हुये, गर्भ शुभ होवे है और घणा दिना तांई पाणी वरसाता रहवै है। पण—तीन उत्पातों हूं वणीड़ा होवै तो घाटो घाले।

मृग मासादिष्वष्टौषट् षोड़श विंशतिश्चतुर्युक्ता ।
विंशतिरथ दिवस त्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः ॥

जद चांद आं पांच नखतरां में हूं किणी एक में आस्यावे तो मिगसर हूं वैसाख तांई छः महीना में क्रम हूं

८, ६, १६, २४, २० और ३ दिनों तांई लगातार मेह बरसा करे है ।

गर्भ समयेऽति वृष्टि गर्भा भावाय निर्निमित्तकृता ।
द्रोणाष्टांशेऽभ्यधिके वृष्टेगर्भ स्तुतो भवति ॥

जदि गर्भ रे टायम में ही बिना कारण ही घणो मेह बरसे तो गर्भ को रहवे नो और तोळे रे आठवें भाग जतो ही पाणी बरस ज्याय तो पड़ेड़ो गर्भ भी नष्ट हो ज्यावै है ।

पवन सलिल विद्युद्गर्जिताभ्रान्वितो यः
स भवति बहुतोयः पञ्चरूपाभ्युपेतः
विसृजति यदि तोयं गर्भ कालेऽति भूरि,
प्रसव समय मित्वा शीकराम्भः करोति ॥

हवा, पाणी, बिजळी, गर्जन और बादल इत्यादि इण पांच कारणों सहित रहा गर्भ घणो पाणी बरसावै । जदि गर्भ रे समय में घणो मेह बरसे तो जन्म रे पछै जल-कणां री वर्षा होवे ।

मेह सम्बन्धी इण जानकारी और इयरे पाछै जो और अणभव हुया वां सारां न भेळा कर र खेतीखड़ां

आपरी बोल चाल री भाषा में कहावता बणाली। आ बड़ी ही अचरज री बात है कि खेतीखड़ां अः कहावतां बणावता वखत किणी कवि री मदद को लीनी नी। खेतीखड़ां मेह सम्बन्धी जानकारी ने आच्छी तरह समझी और वोने बताणे में भी घणी जोगता दिखाई। खाली मेह री जानकारी ही नहीं खेती सम्बन्धी दूसरी सारी बातां भी वां छोटी-छोटी तुकबंदियां में गूंथ ली। जकी कहावत या ओखणा कहावै है।

मेह-सम्बन्धी खेतीखड़ां री जानकारी घणी काम री है। वे पो माह रे महीना हूं ही आगले साल में बरसणे वाळे मेह री बातां पहले हूं ही बताण लागज्यावै है और चौमांसे में भी आभे रे रंग, हवा री चाल, कीड़ी, चिड़ी, बकरी, स्याल, कुत्ता, मेंढक, सांप, किरड़ो आदि जीवां रे शरीर सम्बन्धी रंग-ढंग देख र ही वे समझ जावे हैं कि मेह बरससी या को बरसे नी।

सूरज-चांद री नखतरां में आणे सम्बन्धी ज्योतिष री जानकारी नी अठे देणी घणी काम री है। जिके हूं मेह सम्बन्धी जानकारी री कहावतां रो मतलब समझण में घणी मदद मिलसी।

हर एक राशि में नो चरण और प्रत्येक नखतर में

चार चरण होवे है। सूरज न एक नखतर हूँ दूसरे नखतर तांई जाणे में लगभग चवदह दिन लागे है।

सन् १९७३ में सूरज और चांद, राशियों तथा नखतरों में कब आये इयेरी सारिणियां नीचे दियेड़ी है :—

	राशियां	सूरज कद आयो	चांद कुण से नखतर पर हो
१.	धन	१५-१२-७२	रेंवती
२.	मकर	१४-१-७३	कृतिका
३.	कुंभ	१२-२-७३	मृगशिरा
४.	मीन	१४-३-७३	पुनर्वसु
५.	मेष	११-४-७३	पुष्य
६.	वृषभ	१४-५-७३	चित्रा
७.	मिथुन	१४-६-७३	अनुराधा
८.	कर्क	१६-७-७३	उत्तराषाढा
९.	सिंह	१६-८-७३	पूर्वा भाद्रपद
१०.	कन्या	१६-९-७३	भरणी
११.	तुला	१७-१०-७३	मृगशिरा
१२.	वृश्चिक	१६-११-७३	पुष्य

सारिणी २—नखतरों में आणो

नखतर	दिनांक
१. मूल	१५-१२-७२
२. पूर्वाषाढा	१८-१२-७२
३. उत्तराषाढा	१०-१-७३
४. श्रवण	२३-१-७३
५. धनिष्ठा	५-२-७३
६. सतमीखा	१८-२-७३
७. पूर्वा भाद्रपद	४-३-७३
८. उत्तरा भाद्रपद	१७-३-७३
९. रेंवती	३०-३-७३
१०. अश्वनि	११-४-७३
११. भरणी	२६-४-७३
१२. कृतिका	१०-५-७३
१३. रोहिणी	२४-५-७३
१४. मृगशिरा	७-६-७३
१५. आर्द्रा	२१-६-७३
१६. पुनर्वसु	५-७-७३
१७. पुष्य	१९-७-७३
१८. अश्लेखा	२-८-७३

१९.	मघा	१६-८-७३
२०.	पूर्वा फाल्गुनी	३०-८-७३
२१.	उत्तरा फाल्गुनी	१४-९-७३
२२.	हस्त	२६-९-७३
२३.	चित्रा	१०-१०-७३
२४.	स्वाति	२३-१०-७३
२५.	विशाखा	७-११-७३
२६.	अनुराधा	१९-११-७३
२७.	जेष्ठा	२-१२-७३

सूरज रो मार्ग १२ भागों में बांटेड़ो है, जिका राशि रे नाम हूं जाणीजे है। इण राशियां ने सत्ताइस भागों में बांटो है जिकां न नखतर कह्वे है।

आकाश में रहणे वाला नखतरा रो जमीन पर कींया और किस्यो प्रभाव पड़ै है, इयरो कोई भी सही जवाब दे को सकैनी। खाली चांद रे बारे में ओ देखणे में आयो है कि उजाळे पाख में काटेड़ा बांस एवं लकड़ी बेगी ही सुळन लाग ज्यावै है। इये कारण खेतीखड़ वानै अंधारे पाख में ही काटै है। ज्यादा समझदारां रो ओ मत है कि जद सूरज एक नखतर हूं दूसरे नखतर पर जावै उण समय जमी रै हवा रै घेरे में थोड़ी घणी उथल-पुथल जरूर होवै है।

वहुत पहले समय हूं ही लोगां में ओ विश्वाश चालतो आ रह्यो है कि पो और माह रै महीने में मेहरो ठहरने वालो गर्भ १९५ दिना पछै जन्मे है। याने वरसण लागै है। आ वात भी कवै है कि मिगसर या पो रै उजाले पाख में जदि गर्भ ठहरै है उणरी साढे छः महीना पछै जदि जन्म होवै है तो उणरी संतान कमजोर होसी याने वरसा वहुत कम होसी।

मेह रे गर्भ रा पांच कारण होवै है:—हवा, वर्षा, विजली, गर्जन और वादल। गर्भ रै समय अः पांचों कारण मौजूद होवै तो मेह घणै दायरे में होवै है।

अठै वारह महीनां में मेह रा लक्षण और फल कहावतां रे मुताविक छोटे रूप में दिया जावै है।

मास	तिथि	लक्षण	फल
काती	सुदी ११	बादल और बिजली होवै	तो आषाढ में आछो वर्षा होवै
	१२	बादल गरजै	सारै चौमासे चोखो मेह बरसे
	१५	कृतिका नखतर में बादल और वजली	” ” ”
मिगसर	वदी ८	बादल दिखाई पड़ै और बिजली चमके	पूरै सावण में मेह वरसैं
	वदी या सुदी	सवेरे धंवर आवै	जमानो आछो होवै।
पो	बदी १०	मेह बरसै	सावण रे अंधारे पाखरो १० नै मेह वरसैं
	७	मेह वरसै कोणी	आर्द्रा नखतर में मेह बरसेला।
	७	बादल हो पण मेह न बरसै	सावण री पूर्णमासी न मेह जरूर बरसेला
	१०	बादल हो बिजली चमकै	सारे भादवे मेह वरसेला
	१३	चारों ओर बादल छायेड़ा होवै	सावण री पूर्णमासी और अमावस्या न जोर रो मेह वरससी

मास	तिथि	लक्षण	फल
पो	अमावस	चारो कानी हूँ हवा चालै	चौमासे में जोर री मेह बरसेला।
	सुदी ७	बादल गरजै, बिजलीचमकै	तो सारा काम पूरा होवै।
	८, ९	हवा चालै और मेह बरसै	सारे चोमासे मेह बरसतो रहवै।
माह	बदी ७	बादल बिजली होवै	भादवे री ९ ने मेह बरसे
	,, ९	मूल नखतर होवै।	भादवे री पूर्णमासी ने चार पहर मेह बरसे।
	अमावस	बादल, बिजली, हवा, मेह	तेल और घी मंहगो होसी।
	सुदी १	बादल और हवा	अनाज मंहगो होसी।
	२	बादल, बिजली	गेहूं, जो मंहगा।
	३	,, ,,	पान और नारियल मंहगा।
	४	बादल और मेह	सारो भादवो सूखो रहवै।
	५	उत्तरादी हवा चालै	रूई मंहगी होसी।
	६	बादल गाजै नहीं	क्यांरी ही आशा मत करो।
	७	आकाश साफ होवै	

मास	तिथि	लक्षण	फल
माह	सुदी ७	वादल-मेह	आषाढ में लूंठी वरसा होवै।
	७	वादल, मेह, सरदी	सारे चौमासे वर्षा होवै।
	७-८	वादल	आषाढ में मेह।
	९	वादलां रो घेर घार	भादवै में तालावां रै ऊपर हूं पाणी वहसी
	९	वादल न हो	तालाब भी सूख जासी।
	पूर्णमासी	चांद साफ दिखाई पड़ै	दुरभख काल पड़ै।
फागण	सुदी २	वादल हो पण विजली न हो	सावण भादवै में मेह बरसै।
	७, ८, ९	वादल, बिजली, हवा, वर्षा	भादवै री अमावस नै मेह बरसै।
चैत	सुदी ८	आकाश हूं रेत वरसै	जिधर बिजली चमकै उस दिशा में अकाल पड़ैला।
	९	पानी वरसै	वर्षा रो गर्भ गळ जाय।
	१०	बादल, बिजली	चोमासे भर मेह बरसे

मास	तिथि	लक्षण	फल
चैत	महीने में	किसी दिन बिजली चमकै	वैसाख में मेह बरसै
	वदी ८-१४	जिस दिशा में बादल हो	उणी दिशा में मेह बरसैला
	सुदी १ से ९	बिजली न चमके और	जठे वर्षा होसी बठै ही काल पड़सी
		८-९ ने मेह बरसै	आखिर में अकाल
		आश्विन में मेह बरसै	सूखा
		रेवती में मेह बरसे	तृण काल
		भरणी में मेह	आखिर में जोर रो मेह बरसै
		कृतिका में मेह बरसै	जमानो आछो होवे ।
वैसाख	सुदी १	बादल और बिजली	दुरभख काल पड़ै ।
जेठ	सुदी ३	मेह बरसै	
	पूरे उजाले	आर्द्रा आदि १० नखतर	सारो चोमासो सूखो रहवै ।
	पाख में	बरस जावे	वर्षा रो पाछलो गर्भ गळ जायला
	महीने भर	स्वाती, विशाखा, चित्रा, बिना बादल रै चल्या जाय	

मास तिथि	लक्षण	फल
जेठ महीने भर	सारे महीने तपै	मेह री आशा
सुदी १-१० तांई	पाणी री बूंद गिरै	अकाल पड़ै।
महीने रै अंत में	मेंढक बोलै	मेह बरसै
पूर्णमासी	छींटे पड़ै	शुकन आछो कोनी। आषाढ और सावण सूखा रहसी।
आसाढ वदी १	बादल गरजै	भादवे में मेह बरसेला।
	" "	अकाल पड़सी।
पूरा अंधारा पाख	सोम, शुक्र, बृहस्पतिवार नै लगातार बिजली चमकै	भारी मेह बरसे।
वदी ५	न तो बादल होवे और न ही बिजली दिखाई पड़ै	अकाल पड़सी।
७	चांद पर बादल न हो	सूखा पड़ेला।
९	बादळ चारों ओर गाजै	चारों ओर काल पड़ेला।

मास	तिथि	लक्षण	फल
आषाढ	सुदी १०	मंगल या रोहिणी हो	जमानो होसी ।
		बुध उगने लाग जाय	दुरभख काल ।
		सावण में शुक्रासन होवै	आछो मेह बरसै ।
	सुदी ५	जोर से गाजै	आछो मेह बरसै ।
	६	चांद बादळां हूं ढकोजेड़ो होवे	आनंद होसी
	महीने में	चित्रा, स्वाती, विशाखा में मेह बरसे	अकाल पड़सी ।
	पूर्णमासी	चांद पर बादल होवै	सब सुखी रहसी ।
		चांद साफ होवै	काळ पड़सी ।
		बादल गाजै, बिजली चमकै, मेह बरसे	जमानो होसी ।
	बदी ८	चांद बादळां में हूं निकले	साढे तीन महीना मेह बरससी ।
	६	रविवार होवै	काळ पड़सी ।

मास	तिथि	लक्षण	फल
आषाढ	वदी ६	मंगलवार होवै	जमी धूजसी ।
	”	बुधवार होवै	भाव एकसा रहसी ।
	”	सोम, शुक्र या गुरुवार होवै ।	पृथ्वी आनन्द हूं भरेड़ी रहसी ।
	सुदी ६	घणा बादळ होवे और बिजली चमकै	धापर खेती करो ।
	६	न तो बादल ही होवे और न बिजळी ही दिखाई पड़ै	खेती मत करो । हळ बाळदो ।
	१५	अगूणी, उत्तरादी, ईशाण कोणों री हवा चाले	समो होवै ।
		अगूणी दिखणादी कूंट री हवा चाले	कुसमो रहसी ।
		दिखनादी, आथूणी कूंट	

मास	तिथि	लक्षण	फल
		री हवा चाले	एक बूंद भी को बरसेनी ।
आषाढ	सुदी १५	उत्तरावी और आंथूणी	ऊंदरा और सांप घणा होसी ।
		कूंट री हवा चाले	अनाज घणो होसी ।
	"	अगूणी हवा चाले (परवाई)	मेह घणो बरस सी ।
	"	दिखणावी हवा चाले	धन धान री उपज घणी होसी ।
	"	उत्तरावी हवा चाले	समो होसी पण पाळो पड़सी ।
	"	आंथूणी हवा चाले	उपज सवाई होसी ।
सावण	वदी ४	मेह बरसे	उपज कम होसी ।
	१०	रोहिणी हो	समो होसी ।
	११	" "	कुसमो होसी ।
	११	आधी रात में बादल गाजे	अनाज रो भाव साधारण रहसी ।
	११	कृतिका होवै	समो होसी ।
	"	रोहिणी होवै	जरूर काळ पड़सी ।
	"	मृगशिर होवै	

मास	तिथि	लक्षण	फल
सावण	सुदी ७	सूरज वादळां हूँ ढकोजेड़ो उगे	देवठणी ग्यारस तांई मेह वरसे ।
	वदी १	उगतो सूरज दिखाई न पड़े	सारो चौमासो वरसे ।
	५	जोर री हवा चाले	मेह को वरसे नी ।
	महीने भर	आथूणी हवा चाले	समो होसी ।
	सुदी ७	आधी रात रो वरसे	मेह को होवेनी ।
	अंधारो पाख में	तिथि टूटेड़ी होवै	इस्यो काळ पड़सी कि मां बेटे ने वेच देसी ।
भादवो	महीने भर	जितरा दिनां आथूणी हवा चालसी	उतरादी दिनां में माह में पाळो पड़सी ।
	वदी ११	सारे दिन वादल मंडेड़ा रहवे	सारे चौमासे मेह वरसे कोनी ।
आसोज	अमावस	शनिवार होवै	वखत आछो को होवै नी ।

अह तमाम बातां पुराणे जमाने रे अणभवां रै आधार पर बणोड़ी है। पण अब जमानो आयग्यो ऑटम और हाईड्रोजन रै बमा रो। आं बमां रै परीक्षण हूं पृथ्वी रो वायुमंडल घणो खराब होतो रहवै है। इये कारण हूं वर्षा रै बारे में बणोड़ी कहावतां अबार घणी सही को उतर सकेनी। क्योंकि किणी घणॉं अणभवी माणस ने आ बात पहलैं ही कहदी ही कि "समय रै फेर हूं सुमेर होय माटी रो।" फेर भी अह अणभव भरी बातां और कहावतां घणॉं कामरी है। क्यूंकि घणां स्याणां मिनखां कह्यो है कि—
'सुगन सरोधा और गुरु रा वाचा। कई कूड़ा और कही साचा।'

मेह सम्बन्धी सारी जानकारी पर छंद-रचना भड्डरी री बताई जावे है। पण भड्डरी कुण हो, कठै जनम्यो और कद जनम्यो इये रो ठीक पतो आजतांई को चाल्यो नी।

सुण में आवै है कि काशी हूं कोई एक पंडित इस्यो एक मुहूर्त शोधर घर कानी चाल्यो जिके में गर्भ रहणे हूं घणो पढ्यो-लिख्यो बेटो जन्मतो। पण घर तांई पहुँच को सक्योनी और मजबूर होयर मारग में ही संज्या हो ज्याने रे कारण हूं एक अहीर रे घरे ठहरणो पड़्यो। आ बात भी कहवे है कि वो एक गडरिये रे घरे ठहर्या हा।

रसोई बणाती वेळां उणने उदास देखर अहीरणी उणरी उदासी रो कारण पूछ्यो और उणरे मन रो भेद जाणर खुद नै उण सूं बेटे री कामना करी। उसी रे फल-स्वरूप भड्डरी रो जन्म हुयो। अतः बामण बाप और अहीरिन मां से भड्डरी रो जन्म हुयो।

उत्तर प्रदेश में भड्डरी रे नाम पर भडरिया नाम की एक जात भी मिले है। इं जात रा लोग मेह सम्बन्धी कहावतांरै सहारे हूं मेह रो भविष्य बताया करे है। इं जात रा लोग गोरखपुर जिले में घणा मिले है।

राजस्थान में भड्डरी नाम री एक महिला सुणने में आवै है, जिण रे पति रो नाम डंक हो। भडुरी भंगण और डंक बामण हो। वांरी ओलाद डाकोत हुई।

एक बात आ भी सुणने में आवे है कि भड्डरी सुप्रसिद्ध ज्योतषी बराहमिहिर रो बेटो हो, जिको ऊपर लिखी बात रे मुताबिक एक गड़रिन रे गर्भ हूं जनम्यो हो।

भाषा ने देखते हुये तो भडुरी बराहमिहिर रे जमाने रो कोनी जानपड़ै। आ बात कहणी भी कठिन है कि वो राजस्थान रो हो, या उत्तर प्रदेश रो या बिहार रो हो। क्योंकि भड्डरी री कहावतां मारवाड़ी बोली में भी मिले है और पूर्वी हिन्दी में भी। उण में बातां तो करीब-करीब

एक सी ही है । खाली मायां री पहरावो ही न्यारो-न्यारो है ।

भड्डरी अपणे विषयरा मोटा पंडित हा । इण में तो किणी तरह री संदेह है नहीं वां मेह सम्बन्धी जानकारी गांवारा अणमाणियां लोगां रे वास्ते घणी सोरी करदी । वां रो ओ उपकार छोटो को है नी ।

भड्डरी री थोड़ी बहुत कहावतां नीति रे बारे में भी मिले है और किसी-किसी कहावत में तो घाघ भड्डरी ने बतलावतो मिले है । इये हूं आ बात जचे है कि सायद दोनों एक ही जमाने में होया हा । आ बात भी समझ में आवे है कि घाघ ने अपनी जानकारी बताने वास्ते भड्डरी ने ललकारयो होवै ।

बड़े अचरज री बात है कि अंगरेजां आपरे डेढसौ सालांरे राज में किसाना री मेह सम्बन्धी जानकारी री थोड़ी-घणी ही कदर को करीनी । सायद वांने इये में विश्वाश को होयो होसी नी । वां सन् १८७५ ई. में कलकते रे कनै अलीपुर में एक वेधशाला चालू करी । जिण हूं देशरी जलवायु सम्बन्धी जानकारी रो अध्ययन होण लाग्यो ।

इयेरे पछै शिमला में दूसरी वेधशाला चालू करी ।

जकी १९२७ ई. में शिमला हूं उठायर पूना में लगादी। इसी प्रकार री एक वेधशाला कोदईकनाल (मद्रास प्रान्त) में भी है। इये रे सिवाय दिल्ली, कलकत्ता, वम्बई और मदरास में प्रान्त रा जलवायु केन्द्र भी बणेड़ा है। इण वेधशालाओं तथा केन्द्रों में खेती हूँ सम्बन्ध राखणे वाले जलवायु री जांच होवै है।

रोजीने सवेरे ८॥ बजे संज्या न ५॥ वजे पृथ्वी रे धरातल रे पास रे जलवायु री जांच होवे है। कठै कठै ओर कदै-कदै दुपहरी रे ११॥ बजे ओर रात ने ११॥ बजे भी जांच करी जावै है।

जमीन हूं घणी ऊंचाई वाले हवा रे घेरे री जांच करने शारू हाइड्रोजन गैस रा गुब्बारा रोजीनां एक नियत टैम पर उड़ाया जावै है। इण गुब्बारे हूं ऊंचाई पर चालने वाली हवा का रुख, वहाव और सरदी-गरमी रो पतो लगायो जावै है। गुब्बारे में एक एड़ी कल राखी जावै है जकी अपणे आप सांकेतिक भाषा में ऊंचाई रो, हवा री चाल, गरमी और हवा रे वहाव नैं अंकित करती रहवै है। गुब्बारा एक तह करेड़ी ऊंचाई पर जायर अपणे आप फाट ज्यावै है और कळ राखेड़ो पींजरो जमीन पर गिर ज्यावै है। उणनै उठायर वेधशाला में लाणे री व्यवस्था

पहले हूं ही करेड़ो होवै है। लाणे वाले नै इनाम-इकराम भी दियो जावै है।

हवा री चाल ओर उण री सोल वगैरह रो गह-राई हूं विचार करके पाछली जानकारी रे सहारे हूं ऊपर बतायेड़ी वेधशाला ओर केन्द्रा रा जानकार कार्यकर्त्ता मेह बरसने ओर न बरसने तथा कद बरसेला आदि बातां रो विवरण तैयार कर र समाचार पत्रां ने देश में प्रचार करणो शारू देता रहवै है।

अंग्रेजां रै जाणे रे पछै भी भारत री स्वतंत्र सर-कार भी इणी तोर-तरीका ने ही काम ले रही है।

इये रे मुकाबले में हमारा हर एक खेतीखड़ एक-एक वेधशाला है। जिको पो-माह रे महीना हूं ही हवा री चाल, बरसा, बिजली, बादळ ओर गाजणो जिका मेह रे गर्भ रा लक्षण है, देख सुणर बता सके है कि १६५ दिना रे पछै कद बरसा होवेला अथवा नहीं होवेला।

मेह सम्बन्धी थोड़ी-बहुत कहावतां जो खेतीखड़ां में प्रचलित है नीचे दी जावै है—

मेह रे गर्भ रा साधारण चिन

बादल वायु विज्जु बरसंत।
कड़के गाजै उपल पड़ंत॥

धनुष और परिवेसे भान।
हेम पड़े दस गर्भ प्रमान॥

(उत्तर प्रदेश री)

वादल रा होणा, हवा रो चालणो, बिजली रो चमकणो, मेह वरसणो, आकाश रो कड़कनो, वादळा रो गाजणो, इन्द्र धनुष तणना, सूरज रे बाहिर कुंडाळो होणो ओर सरदी पड़ना—अः दस लक्षण मेह रे गर्भ धारण करणे रा है।

कातिक सुदी एकादसी, वादल विजुली जोय।
तो आसाढ में भड्डरी, वर्षा चोखी होय॥

काती रे उजाले पाख री इग्यारस रे दिन अकाश में वादळ होवे ओर बिजली चमकै तो आगले आषाढ में मेह बरसेला, ऐसा भड्डरी कहवे है।

कार्तिक सुदि द्वादसि को देखो।
मार्गशीर्ष दसमी अवरेखो॥
पौष सुदी पंचमी विचारा।
माघ सुदी सातै निरधारा॥
तादिन जो मेघा गरजंत।
मास चार अम्बर वरसंत॥

काती सुदी बारस, मिगसर सुदी दसमी, पो सुदी पांचम और माह सुदी ७ ने जदि बादल गाजै तो आगली साल चार महीना तांई लगातार मेह वरसतो रहवै ।

कातिक मावस देखो जोसी ।
रवि, सनि, भोमवार जो होसी ।
स्वाति नखत औ आयुप जोग ॥
काल पड़ै औ नासै लोग ।

काती की अमावस ने देखो । जदि वह रविवार, शनिवार या मंगलवार को पड़ै और उण दिन स्वाति नखतर और आयुप जोग होवै तो अकाल पड़ेला और मिनखां रो नाश होवेला ।

कार्तिक सुदि पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होय ।
तामे बादल बीजुली जो सँयोग सूं होय ॥
चार मास वर्षा तब होसी ।
भली भांति भाखै जोशी ॥

काती सुदी पूर्णमासी रै दिन जदि कृतिका नखतर हो और संजोग हूं उण दिन घटा घिर आवे और बिजली चमकै तो आगले साल चार महीना तांई लगातार मेह बरसतो रहवै ।

कातिक वारस मेघा दरसे ।
सो मेघा असाढहि बरसै ॥

कातो री वारस ने वादल दिख ज्यावं । तो वे वादल आगले साल आसाढ में वरसेला ।

कातो में सह साथी

कातो में सारे अनाजां री फसल एक साथे पक ज्यावं है ।

कातो रो मेह, कटक बराबर ।

कातो में वरसण वालो मेह डाको डालणे वाला रे समान ही नुकसान करे है ।

मंगलवारी होवे दिवाली, हंसे किसान रोवे वोपारी

मंगलवारी दिवाली होवे तो आगलो जमानो आछो होवं जिके हूं खेतोखड़ राजी होवं और व्यापारी रोवं ।

स्वाती दीपक प्रज्वले, विसाखा पूजे गाय ।
लाख गयंदा घड़ पड़े, या शाख निष्फल जाय ॥
(उत्तर प्रदेश)

जदि दीपावली स्वाति नखतर में होवं और गोरधन रो पूजन दूसरे दिन विशाखा में होवं तो झगड़ो होसी

जिके में लाखों हाथी मारचा जासी या अकाल पड़सी।

चित्रा दीपक चेतवै, स्वाते गोवर्धन्न।
डंक कहे हे भड्डली, अथग नीपजे अन्न।

जदि दीवाली चित्रा नखतर में और दूसरे दिन गोरधन पूजा स्वाती नखतर में होवै तो अनाज घणो होसी।

—मिगसर—

मिगसर वदी आठैं घन दरसै।
सो मेघा भरि सावन वरसै॥

मिगसर वदी आठ्युं न बादल दिखाई देवै। तो वे बादल सारे सावण रे महीने मेह बरसासी।

मार्ग महीना मांहि जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोले भड्डरी, निपजे सातो तूर॥
(उत्तर प्रदेश)

मिगसर रे महीने में जदि न तो जेष्ठा नखतर तपै, और न हो मूल तो सातों तरह रा अन्न (गेहूँ, जो, चना, मटर, अरहर, धान और उड़द) घणा उपजसी।

मार्ग वदी आठैं घटा, विज्जु समेती जोड़।
तो सावण बरसै भलो, साख सवाई होय॥

मिगसर वदी आठयूं न बिजली रे साथे बादळ होवै तो सावण रै महीने में आछो मेह वरसेला।

मिगसर वद् वा सुद् मंही आधे पो उरे।
धंवरा धुंध मचायदे, तो समो होय सरे॥

मिगसर रै अंधारे पाख में या उजाले पाख में आधे पो हूं पहिले पहिले जदि धंवर या घणा बादल सवेरे सवेरे आज्यावे तो आगलो जमानो आछो होसी।

मिगसर वद् वा सुद् मंही आधे पो उरे।
धंवर न भीजै धूल तो, करसण काह करे।

मिगसर बदी या सुदी तथा आधे पो हूँ पहिले जदि जमीन ओस या धंवर हूं भीजै नहीं तो खेती करणी बेकार है अर्थात् जमानो आछो को होवेनी।

—पो—

पूस मास दसमी अंधियारी।
बदरी होय घोर अंधियारी॥
सावन बदि दसमी के दिवसै।
भरिकै मेघ अधिक बरसै॥

(उत्तर प्रदेश)

जदि पो वदी दस्यु रे दिन बादळ होवे और घणो अंधेरो छा जावे तो सावण वदी दस्यु ने जोर रो मेह वरसै।

पौष अंधारी सत्तमी, जो पानी नहिं देइ।
तो आद्रा बरसै सही, जल थल एक करइ॥
(उत्तर प्रदेश)

पो वदी सात्यु न जदि मेह न वरसै तो आर्द्रा नखतर में मेह जरूर बरसैला और जल-थल एक कर देला।

पौष अंध्यारी सत्तमी, बिन जळ बादळ जोय।
सावन सुदि पूनों दिवस, वरषा अवसिहिं होय॥
(उत्तर प्रदेश)

पो वदी सात्यु रे दिन बादळ तो होवे। पण बरसै नहीं तो सावण सुद पूर्णमासी रे दिन जरूर मेह बरसैला।

पौष बदी दसमी दिवस, बादल चमकै बीज।
तो बरसै भर भादवां साधो खेलो तीज॥

पो वदी दसमी रै दिन में बादळां में बिजली चमकै तो सारे भादवे आछो बरसा होसी। तीज रो त्यौहार आनन्द रै साथे मनाओ।

पौष अंध्यारी तेरसैं, चहुँ दिस वादळ होय ।
सावण पूनो मावसै, जळधर अति ही होय ॥

जदि पो वदी तेरस रे दिन च्यारूं मेर वादल दिखाई पड़े तो सावण महीने री अमावस और पूर्णिमा न जोर रो मेह वरसेला ।

पूस अमावस मूळ को सरसै चारूं वाय ।
निश्चय वांधो झोंपड़ो, वर्षा होय सिवाय ॥

पो रे महीने री अमावस को जदि मूळ नखतर पड़ जाय और चारों ओर से हवा वाजण लाग ज्याय तो झोंपड़ो वणाल्यो—मेह घणो ही वरससी ।

सनि आदित औ मंगलो, पौप अमावस होय ।
दुगनो तिगुनो चौगुनो, नाज महंगो होय ॥

पो री अमावस ने जदि सनिवार, रविवार या मंगलवार पड़ज्याय तो इये ही क्रम हूं नाज दुगनो, तिगुनो और चोगुनो महंगो होसी ।

सोमां, सुकरां सुरगुरां, पौप अमावस होय ।
घर घर वजै वधावड़ा, दुखी न दीखे कोय ॥

पो री अमावस न जदि सोमवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार पड़ज्याय तो घर-घर वधाइ बाजेली और एक ही मिनख दुःखी को रहवेनी।

पूस उजाली सप्तमी, आठैं नवमी गाज।
गर्भ होय तौ जान लै, अब सरि हैं सब काज॥

पो रे उजाले पाख री सात्युं, आठ्युं और नोम्युं न बादळ होवे तो समझलो अब सारा काम सर ज्यासी।

काहे पंडित पढ़ि-पढ़ि मरो।
पूस अमावस की सुधि करो॥

मूल विशाखा पूरवापाढ।
झूरा जान तो बाहिरे ठाढ॥

पंडित जी पढ-पढ र क्यूं दुख पाओ हो। पो रे महीने री अमावस ने देखो। जदि उण दिन मूळ, विशाखा या पूर्वापाढ नखतर पड़ता हो तो समझना कि काळ फळसे रे आगे खड़्यो है। अर्थात् काळ पड़सी।

—माह—

माघ अंधेरी सप्तमी, मेह बिज्जू दमकंत।
मास चार बरसै सही, मत सोचै तू कंत॥

माह महीने रे अंधारे पाख री सात्यु न जदि बादळ हो और बिजली चमके तो हे स्वामी चिंता करनी छोड़ दयो। चार मास लगातार मेह बरसेला।

नौमी माघ अंधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
तो भादौं नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद॥

माह बदी नौम्यु न जदि मूल नखतर होवे तो भादवा नवमी को मेह जरूर बरसेगा।

माघ अमावस गर्भमय, जो केहु भांति विचारि।
भादों की पुन्यो दिवस, बरखा पहर जु चारि॥

माह री अमावस न बादल, बिजळी, हवा आदि होवे तो भादवे की पूर्णमासी रे दिन च्यार पहर तांई मेह बरसेला।

माघ जो परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय।
तेल और सुरही सबै, दिन दिन महंगो होय॥

माह महीने रे उजले पाख री एकम रे दिन बादल हो और हवा चाले तो तेल और घी महंगे होते जायंगे।

माघ उज्यारी दूज दिन, बादळ विज्जु समाय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु महंगो होय॥

माह सुदी २ रे दिन बादळों में बिजळी चमकती दिखाई पड़े तो अनाज महंगा होगा।

माघ उजारी तीज को, बादर बिज्जु जु देख।
गेहूं जौ संचय करो, महंगो होमी पेख॥

माह रे महीने रो उजाळे पाख री तीज रे दिन जदि बादळ और बिजळी दिखाई पड़ जाय तो गेहूं और जौ भेळा करो। महंगाई बढेली।

माघ उजारी चोथ को, मेह बादरो जान।
पान और नारेळ नै, महंगो अवसि वखान॥

माह सुदी चोथ रे दिन बादळ होवै और मेह बरसै तो पान और नारियल जरूर महंगा होसी।

माघ छठी गरजै नहीं, महंगो होय कपास।
सातें देखो निर्मली, तो नाहीं कछु आस॥

मांह महीने री सुदी छठ ने जदि बादळ गाजे नहीं तो रूई महंगी होसी। सातुं रे दिन आकाश साफ रहे तो कुछ भी आशा नहीं।

माघ उजेरी छठ को, चार होय जो चंद।
तेल घीव को जानिये, महंगो होय दुचंद॥

माह सुदी छठ रे दिन जदि सोमवार होवे तो तेल और घी दूणो महंगो हो ज्यासी ।

माघ सत्तमी उजळी, बादळ मेघ करंत ।
तौ असाढ में भड्डरी, घनो मेघ बरसंत ॥

माह सुदी सात्युं रे दिन जदि बादळ मंड ज्याय तो आसाढ में घणो मेह बरससी ।

माघ सुदी जो सत्तमी, विज्जु मेह, हिम होय ।
चार महीना बरससी, सोक करो मति कोय ॥

माह सुदी सात्युं रे दिन जदि विजली चमके, मेह बरसै और ठंड बेसी होवे तो पूरे चोमासे मेह बरसतो रहसी । कीं ही बात री चिन्ता मत करो ।

माघ सुदी जो सत्तमी, सोमवार दी संत ।
काळ पड़े राजा लड़ै, सगरे नरा भ्रमंत ॥

माह सुदी सात्युं सोमवारो होवै तो काळ पड़सी, राजा लड़सी और सारा लोगबाग भ्रमीजेड़ा रहसी ।

माघ जो सातैं कज्जली, आठैं बादळ होय ।
तो आसाढ में धूरवा, बरसै जोशी जोय ॥

माह वदी सात्युं और आठ्युं रे दिन बादळ होवे तो आसाढ में मेह बरसेला ।

माघ सुदी जो सत्तमी, भौमवार की होय ।
तो भड्डर जोशी कहे, नाज किरानो लोय ॥

माह सुदी सात्युं जदि मंगलवारी होवे, तो अनाज में कीड़े पड़ जायला ।

माघ सुदी आठें दिवस, जो कृतिका रिख होय ।
की फागण रोली पड़े, की सावण महगो होय ॥

माह सुदी आठ्युं रे दिन जदि कृतिका नखतर पड़ जाय तो या तो फागण में पाळो पड़सी या सावण में महंगाई वढसी ।

अथवा नोमी उजळी, वादळ करै त्रिपाळ ।
भादों में वरसै घणो, सरवर फूटै पाळ ॥

माह सुदी नोमी रे दिन जदि घटा ऊमटे तो भादवे में इतरो मेह वरससी कि तालावां री पाळां टूट ज्यासी ।

अथवा नोमी निर्मली, वादळ रेख न जोय ।
तो सरवर भी सूखसी, महि में जळ नहीं होय ॥

माह सुदी नवमी रे दिन वादळ दिखाई न पड़

तो आगली साल तालाब भी सूख ज्यासी और मेह बरसे नहीं।

माघ सुदी पूनो दिवस, चंद निर्मलो जोय।
पशु बेचो कण संग्रहो, काल हलाहल होय ॥

माह सुदी पूर्णिमा न जदि चांद साफ दिखाई पड़े तो पशु बेच द्यो अनाज भेळो करो। क्युं कि दुरमख काळ पड़ेला।

माघ माह में पड़ै न सीत।
महंगो नाज जानियो मीत ॥

जदि माह रे महीने में सी न पड़े तो मित्र अनाज महंगा हो ज्यायगा।

माघ पांच जो हों रविवार।
तो भी जोशी करो विचार ॥

माह रें महीने में जदि पांच दीतवार पड़ज्याय तो भी सोच री बात है। कारण अः शुकन भला कोनी।

—फागण—

फागण वदी सु दूजदिन, वादळ होय न वीज।
वरसै सावण भादवो, साधो खेलो तीज ॥

फागण वदी दूज रे दिन बादल तो मंडे पण बिजळी नहीं चमके, सावण भादवे में मेह बरससी। आनंद रे साथ तीज का त्यौहार मनाओ।

मंगळ वारी मावसी, फागण चैती जोय।
पशु बेचो कण संग्रहो, अवसि दुकालो होय॥

फागण और चैत री अमावसां मंगलवारो होवे तो पशुओं को बेचदयो और धान जमा करो। क्युंकि अह अहनाण काळ रा है।

फागण सुदी जु सत्तमी, आठें, नौमी गंभ।
देख अमावस भादवे, पैये मेह सुलंभ॥

फागण सुदी सात्युं, आठ्युं या नौम्युं रे दिन जदि मेह रो गर्भ ठहरे तो भादवे री अमावस रे दिन मेह बरसेला।

पांच मंगरो फागुणो, पूस पांच सनि होय।
काल पड़ै तब भड्डरी, बीज बओ जनि कोय॥

जदि फागण में पांच मंगलवार और पो में पांच शनिवार पड़ ज्याय तो कोई भी हळ मत जोतो क्योंकि काळ पड़सी।

होली सूक सनीचरी, मंगल वारी होय।
चाक चहोड़े मेदनी, विरला जीवे कोय॥

जदि होळी शुक्र, शनि या मंगलवारी होवे तो धरती पर जोर रो बखेड़ो होसी और शायद ही कोई जीवतो रहवे।

–चैत–

चैत अमावस जै घड़ी, चलतु पत्रा माय।
तेता सेरा भड्डरी, कातिक धान विकाय॥

चैत रो अमावस चलु पतड़े में जिती घड़ी री होसी, काती में धान बिता ही सेरां रो बिकसी।

चैत सुदी रेंवती जोय।
वैशाखहिं भरनी जो होय॥
जेठ मास मृगसर दरसंत।
पुनरवसु आसाढ चरंत॥
जितो नक्षत्र कि बरतो जाई।
तेतो सेर अनाज विकाई॥

चैत में रेंवती, वैसाख में भरणी, जेठ में मृगशिरा

और आसाढ में पुनर्वसु नखतर जित्ती घड़ी रहसी वित्ता ही सेरां रे भाव धान विकसी ।

चैत मास उजियारे पाख ।
आठैं दिवस बरसता राख ॥
नौ बरसै जित बिजळी जोय ।
ता दिसि काळ हळाहळ होय ॥

चैत सुदी आठ्यु रे दिन जदि आकाश में धूल बरसती रहे और नवमी रे दिन मेह बरसे, तो जठीने विजळी चमकेला वठीने दुरभख काळ पड़सी ।

चैत मास दस रीखड़ा, बादळ बिजळी होय ।
तौ जानो चित माहिं यह, गर्भ गळा सब जोय ॥

चैत सुदी दस्यु रे दिन बादळ और बिजली होवे । तो समझल्यो मेह रो गर्भ गळ ग्यो । चोमासे में मेह कम बरससी ।

चैत दस रीखड़ा, जो कहुँ कोरो जाय ।
चोमासे भर बादळा, भली भांति बरसाय ॥

चैत सुदी दस्यु रे दिन बादळ को होवे नी तो आ समझल्यो कि सारे चोमासे आछो मेह बरससी ।

चैत चिड़पड़ो, सावण निर्मलो ।

जदि चैत में बूंदा-बूंदी होती रहवे तो सावण में बूंद ही को पड़ेनी ।

चैत पूर्णिमा होई जो, सोम गुरौ बुधवार ।
घर घर होय वधावड़ा, घर घर मंगळवार ॥

जदि चैत सुदी पूर्णमासी सोमवारी, गुरुवारी या बुधवारी पड़ ज्याय तो घर-घर बधाई बंटै और मंगळाचार होवे ।

चैत मास जो बीज विजौवे ।
भरि वैशाखां टेसू धोवे ॥

(उत्तर प्रदेश)

चैत रे महीने में बिजळी चमके तो वैसाख में इती जोर री वर्षा होवे कि ढाक तक रा फूल धूळ में मिल जाय ।

चैत मास में पख अंधियारा ।
अष्टम, चौदस, दो दिन सारा ॥
जिण दिस बादळ तिण दिस मेह ।
जिण दिस निर्मल तिण दिस खेह ॥

चैत वदी आठ्यु और चवदस रे दिनां में जिण दिशा में बादळ मंडसी, उण दिशा में मेह् बरसेला। पण जिण दिशा में आकाश साफ रहेला उण दिशा में आंध्या चालेली।

चैत मास उजियारो पाख।
नो दिन बीज लुकोई रखा॥
आठम नम नीरत कर जाय।
जहां बरसे वहां दुरभख थाय॥

चैत सुदी एकम से नवमी तांई जदि बिजली चमके नहीं। खास तोर से आठ्यु और नवमी रे दिनां ने देखणो चाइजै। इण दिनां में जठै-जठै मेह् बरसेला वठै वठै दुरभख काळ पड़ेला।

असनी गळियां अंत विनासै।
गली रेवती जल को नासै॥
भरनी नासै तृना सहूतो।
कृतिका बरसै अंत बहूतो॥

चैत रे महीने में जदि अश्विनी नखतर बरस जाय तो चोमासे रे अंत में मेह् को बरसेनी। रेवती नखतर बरस

जाय तो चोमासे में मेह बरसेला ही नहीं। भरणी नखतर बरस जाय तो चोमासे में तिणो ही को होवे नी और जदि कृतिका नखतर बरस जाय तो आखिर में चोखो मेह बरसे।

चैत मास में पख अंधियारा।
आठम, चौदस दो दिन सारा॥

जेही दिस वादळ तेहि दिस मेहा।
जेहि दिस निरमल तेही दिस खेहा॥

चैत रे अंधारे पाख री आठ्युं और चौदस रे दिन जिण दिसा में वादल मंडसी उणी दिसा में चोमासे में मेह वरससी। जिण दिशा में आकाश साफ रहसी उण दिशा में खेह उडसी।

–वैसाख–

वैशाखी सुदि प्रथम दिन, वादळ बिज्जु करेइ।
दामा बिना बिसाहिजै, पूरी साख भरइ॥

वैसाख सुदी दूज रे दिन वादळ और बिजळी होवै तो ऐड़ो चोखो समो होसी कि धान विना पीसां मिलसी।

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत।
तो भाखै यूं भड्डरी, निपजै नाज बहुत॥

वैसाख में आखातीज जदि गुरुवारी होवै तो धान रा धोरा लाग जासी।

अखै तीज रोहिणी न होई।
पौष अमावस मूल न जोई॥
राखी स्रवणी हीन विचारो।
काती पूनो कृतिका टारो॥
महि मांही खल बलहिं प्रकासै।
कह भड्डरी सालि विनासै॥

जदि आखातीज रे दिन रोहिणी नखतर न होवे, पो री अमावस न मूळ नखतर को होवे नो, राखी पून्म रे दिन श्रवण और काती री पून्म रे दिन कृतिका न होवे तो दुष्टां रो जोर वढसी और समो चोखो को होवेनी।

—जेठ—

जेठ पहिल परिवा दिना, वासर बुध जो होय।
मूल असाढी जो मिलै, पृथ्वी कम्पै जोय॥

जदि जेठ रे महीने री वदी एकम टूट ज्याय और उण दिन बुधवार पड़ै और इये रे साथे-साथे आषाढ री पून्म न मूळ नखतर और पड़ जाय तो धरती दुख हूं धूजण लाग ज्यासी ।

जेठ आगली परिवा देखू ।
कौन बासरा है यूं पेखू ॥

रवि वासर अति बाढ चढाय ।
मंगलवारी व्याधि बताय ॥

बुधा नाज महंगा जो करई ।
सनि बासर परजा परिहरई ॥

चन्द्र, सुक्र सुर गुरु के वारा ।
होय तो अन्न भरो संसारा ॥

जेठ वदी एकम रविवारी होवै, तो बाढ आसी, मंगलवारी होवै तो रोग बढसी, बुधवारी होवै तो धान मंहगो होसी, शनिवारी होवै तो प्रजा पर भार पड़सी । सोमवारी, शुक्रवारी या गुरुवारी होवै तो दुनिया अनाज हूं भर-ज्यासी ।

जेठ वदी दसमी दिना, जो सनिवासर होय ।
पानी होय न धरनि पर, विरला जीवें कोय ॥

जदि जेठ वदी दसमी शनिवारो होवे तो धर
पर मेह नहीं वरसेला और शायद कोई ही जीवतो रहवे

जेठ उजेरी तीज दिन, आर्द्रा रिख वरसंत ।
जोसी भाषै भड्डरी, दुरभिछ अवस करंत ॥

जदि जेठ सुदी तीज रे दिन आर्द्रा नखतर में
वरस जाय तो जरूर दुरमख काल पड़सी ।

जेठ उजारे पाख में, आर्द्रादिक दसरिच्छ
सजळ होय निर्जल कह्यो, निर्जल सजल प्रतच्छ ।

जेठ सुदी में आर्द्रा-आदि दसों नखतरों में मेह बर
जाय तो चोमासे में मेह को होवेनी और वरसे नहीं
चोमासे में घणो मेह वरससी ।

स्वाति विसाखा चित्तरा, जेठ जो कोरी जाय ।
पिछलो गरभ गल्यो कह्यो, वनी साख मिट जाय ।

स्वाती, विशाखा और चित्रा, जेठ रे महीने
विना वादळ रे चली जाय तो समझना मेह रो पिछलो ग
गळायो । फलस्वरूप खेती सूख ज्यासी ।

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो जानो वरसा री आशा॥

जदि जेठ रो सारो महिनो तपतो रहे तो मेह री जरूर आशा करो।

उत्तरे जेठ वोले दादर।
कहे भड्डरी वरसै बादर॥

जेठ रे उतरते महीने में जदि मेंढक बोलने लग जांय तो मेह जरूर बरसेला।

जेठ अंत बिगाड़िया पूनम नै पड़वा।

जेठ महीने री पूनम और पड़वा रे दिन बूंदा-बूंदी होवे तो सुगन आछो कोनी।

—आसाढ—

जेठ बीती पहली पड़वा जो अम्बर धर हरै।
आसाढ सावण जाय कोरो, भादवै बिरखा करै॥

आसाढ री पहली पड़वा रे दिन जदि बादल गाजै तो आसाढ और सावण-सूखा जावेला। मेह भादवे में बरसेला।

पहली पड़वा गाजै तो दिन वहोतर वाजै।

आसाढ वदी एकम रे दिन वादल गाजै तो वहोतर दिना तांई लगातार आंधियां चाल ती रहे।

कृष्ण असाढी प्रतिपदा, जो उत्तर गरजंत।
छत्री-छत्री जूझिया, निश्चै काल पडंत॥

आसाढ वदी एकम रे दिन जदि उत्तर दिसा में वादळ गाजै तो राजाओं में झगड़ा होगा और जरूर काळ पड़ेला।

धुर आसाढी विज्जु की, चमक निरंतर जोय।
सोमा सिकरां सुरगुरां, तो भारी जल होय॥

आसाढ वदी में जदि सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार न लगातार विजळी चमकती रहे तो भारी वरसा होवेला।

धुर असाढ की पंचमी, वादळ होय न बीज।
बेचो गाडी वळदिया, निपजै कछू न चीज॥

आसाढ वदी पांच्यूं रे दिन जदि न तो वादळ ही होवे और नहीं बिजली चमकती दीखे तो गाड़ी और वळदां न बेच दयो। कोई सो ही धान नीपजैला नहीं।

धुर असाढ री अष्टमी, ससि निर्मलियो दीख।
पीव जाय के मालवे, मांगत फिरि हैं भीख॥

आसाढ वदी आठ्यूं रे दिन जदि चांद साफ दिखाई पड़ै तो मेह नहीं बरसेला। हे स्वामी माळवे में जायर भीख मांगनी पड़ेली।

नवैं असाढी बादळी, जो गरजै घनघोर।
कहे भड्डरी ज्योतिषी, काळ पड़ै चहुँ ओर॥

असाढ बदी नवमी रे दिन जदि बादळी हो और जोर हूं गाजै तो चारू ओर काळ पड़ेला।

दसैं असाढी कृष्ण को, मंगल रोहिनी होय।
सस्ता धान विकाइ है, हाथ न छुइ है कोय॥

आसाढ वदी दस्यु रे दिन जदि मंगलवार और रोहिणी नखतर पड़जाय तो अनाज इतरो सस्तो हो ज्यासी कि लोग हाथ ही को लगावे नी।

सुदि असाढ में बुद्ध को, उदै भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखौ, महाकाल अवरेख॥

आसाढ वदी में जदि बुद्ध उगण लागज्याय और

सावण में शुक्र छिप जाय तो दुरभख . काळ रा अहनाण है।

सुदि असाढ की पंचमी, गरज धमधमो होय।
तो यों जानो भड्डरी, मधुर मेवा जोय॥

आसाढ सुदी पांच्यु रे दिन बादळ गाजे तो मेह आछो बरसेला।

सुदि असाढ नौमी दिना, वादर झीनो चंद।
तो यों जानो भड्डरी, भूमि घणो आनंद॥

आसाढ सुदी नवमी रे दिन जदि चांद पर पतली बादळां री चादर छायेड़ी होवे तो धरतो पर घणो आनंद रहसी।

चित्रा स्वाति विसाखड़ी जो बरसे असाढ।
चालौ नरां विदेसड़े, परि है काल सुगाढ॥

जदि आसाढ में चित्रा स्वाती और विशाखा नख-तरों में मेह बरसे तो काळ पड़ेला और मिनखां ने परदेशां जाणो पड़सी।

आसाढी पूनो दिना, बादळ भीनो चंद।
तो भड्डर जोशी कहे, सगळा नरा अनंद॥

आसाढ री पूनम रे दिन जदि चांद बादळा हूं ढकी

जेड़ो होवे तो सारा मिनख आनंद हूं रहसी । अर्थात् चोखो समो होसी ।

आसाढी पूनम दिना, निर्मल ऊगै चंद ।
पीया जा ओ तुम मालवा, अटूठै छै दुःख द्वन्द ॥

जदि आसाढ री पूनम रे दिन चांद बिलकुल साफ दिखाई पड़े तो हे पिया तुम माळवा चले जाओ अठै तो दुःख हूं झगड़ो करणो पड़सी । क्योंकि काळ पड़ेला ।

आसाढी पूनम दिना, गाज, बीज वरसंत ।
नासै लच्छन कालका, आनंद मानो संत ॥

आसाढ री पूनम रे दिन जदि गाजे, विजली खीवें और मेह बरसे तो आछै समे रा लच्छण है । घणो आनंद रहसी ।

आगे रवि पीछै चलै, मंगल जो आसाढ ।
तो वरसै अनमोलही, पृथ्वी अनंदै वाढ ॥

आसाढ रे महीने में जदि रवि आगे और मंगळ पीछे चाले तो मेह घणो बरससी और धरती पर मिनख आनंद मनासी ।

आसाढी आठैं अंधियारी।
जो निकले चंदा जलधारी॥
चंदा निकळे बादळ फोड़।
साढै तीन मास बरसा रो जोग॥

आसाढ बदी आठ्यूं रे दिन जदि चांद बादळां नैं फाड़ कर उगै तो आगले साढे तीन महीना तांई मेह बरससी।

आगे मंगल पीछे रवि, जो असाढ के मास।
चोपट नासै चहुँ दिसा, विरलै जीवन आस॥

जदि आसाढ रे महीने में मंगल आगे हो सूरज पीछे तो च्यारू मेर पशुमरेला और शायद कोई भी जीवतो न रहे।

न गिनु तीन सै साठ दिन, ना करु लग्न विचार।
गिन नोमी आषाढ वदि, होवै कोनिउ वार॥
रवि अकाल मंगळ जग डगै।
दुधा समो सम भावो लगै॥

सोम शुक्र सुरगुरु जो होय ।
पुहुमी फूल फलंती जोय ॥

न तो साल रा तीन सौ साठ दिन गिणो और न हो लग्न देखो । आसाढ बदी नवमी रो ही विचार करो वह कुण से वार में पड़सी । जदि रविवार पड़ेला तो काळ पड़सी, मंगलवारी होसी तो धरती धूजेला, बुधवारी होसी तो भाव घटै-बदै कोनी, और सोमवारी, शुक्रवारी या गुरुवारी पड़सी तो धरती धन-धान हूं भर ज्यासी ।

आसाढी धुर अष्टमी, चंद सवेरा छाय ।
चार मास चवता रहे, जिउ भांडै रे राय ॥

आसाढ बदी आठ्यूं रे दिन चांद ने बादळ घेरेड़ो राखै तो च्यारूं मास फूटेड़ी हांडी री तरह चूवता रहसी ।

आषाढै सुद नौमी, घन बादळ घन बीज ।
कोठा खरे खंखेर दो, राखो बळद न बीज ॥

जदि आसाढ सुदी नवमी रे दिन घणा बादल होवे और बिजली खूब चमके, तो कोठा खाली करद्यो । अर्थात् सब बीज बादयो । खाली बळद और बीज ही राखो । अर्थात् जमानो आछो होसी ।

आसाढ़ै सुद नौमी, न बादळ न बीज।
हळ फाड़ो इंधण करो, बैठे चाबो बीज॥

आसाढ सुदी नवमी रे दिन न तो बादळ होवे न बिजळी ही दिखाई पड़े तो हळ न फाड़ र इंधण करल्यो और बैठ्या-बैठ्या बीज चावो। अर्थात् काळ पड़सी।

—सावण—

सावण पहिली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाखें यों भड्डरी, साख सवाई जाय॥

सावण वदी चौथ रे दिन जदि मेह बरसे तो उपज सवाई होसी।

सावण पहले पाख में, दसमी रोहिनी होइ।
महंगा नाज अरु अल्प जळ, विरला विलसैं कोइ।।

सावण वदी दसमी रे दिन जदि रोहिणी नखत पड़ज्याय तो अनाज महंगो होसी मेह थोड़ो-थोड़ो बरससी और सायद ही कोई सुखी होवे।

सांवण वदी एकादसी, जेती रोहिणी होय।
ते तो समयो ऊपजै, चिंता करो न कोय॥

सावण वदी ग्यारस र दिन जिता घड़ी रोहिणी

नखतर रहसी उणी हिसाब हूँ उपज होसी । बिना मतल-
बरी चिंता मत करो ।

सावण कृष्ण एकादसी, गरजि मेघ अधरात ।
तुम जाओ पिया मालवा, हम जावें गुजरात ॥

सावण बदी ग्यारस र दिन जदि आधी रात में
बादळ गाजै तो काळ पड़सी । तुम तो स्वामी मालवे जाओ
और मैं गुजरात जाऊंगी ।

जो कृतिका तो किर वरो, रोहिणी होय सुकाल ।
जो मृगसिर आवै वहां, निहचै पड़े दुकाल ॥

जदि सावण बदी बारस रे दिन कृतिका नखतर
होवे तो अनाज रो भाव साधारण रहसी । रोहिणी नख-
तर होवे तो समो होसी और मृगशिर होवे तो जरूर काल
पड़सी ।

चित्रा स्वाति विसाखड़ी, सावण नहीं वरसंत ।
हाली अन्नै संग्रहो, दूनों मोल करंत ॥

जदि चित्रा स्वाती और विशाखा नखतर सांवण
में बरसे नहीं तो अनाज का भाव दूणा होज्यायगा । वेगो ही
अनाज भेळो करल्यो ।

करक जु भींजै कांकरो, सिंह अभीनो जाय।
ऐसा बोले भड्डरी, टीड़ी फिर फिर खाय॥

जदि सावण में सूरज कर्क राशि पर होवे तो मे
कांकरा ही भीजेला। श्रोर सिंह राशि पर हो और वह
सूखी जाय, तो टीडी जन्मेली और फिर-फिर फसल
खासी।

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गेहूं गोरस गोरड़ी, विरला विलसै कोय॥

जदि मीन का शनिचर, कर्क का गुरुवार औ
तुला का मंगल हो तो, गेहूं, दूध और ऊख की फस
खराब हो ज्यासी। शायद ही इनसे कोई सुखी होवे।

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय
राजा विग्रह प्रजा छय, विरला जीवे कोय

शनैश्चर मीन रो होवे या तुला रो, दोनों
दशाओं में राजाओं में लड़ाई होसी। प्रजा रो नास हो
शायद ही कोई बचसी।

सावण सुकला सप्तमी, छिपि के ऊगै भां
तब लग देव बरीसिहैं, जब लग देव उठा

यदि सावण बदी सात्युं रे दिन सूरज बादळा में लुक्येड़ो उगै तो देवउठणी ग्यारस तांई मेह बरसेला।

सावण केरे प्रथम दिन, उगत न दीखै भान।
चार महीना जळ गिरै, या को है परमान॥

सावण बदी पड़वा रे दिन जदि सूरज उगते समय दिखाई न पड़े तो जरूर ही च्यारों महीना मेह बरसेला।

सावण वदी एकादसी, बादळ उगै सूर।
तो यों भाखें भड्डरी, घर घर बाजै तूर॥

सावण वदी ग्यारस रे दिन जदि सूरज बादळों में उगै तो भड्डरी यूं कहता है कि घर घर आनंद के बाजे बाजेंगे।

सावण शुक्ला सत्तमी, चंदा छिटिक करे।
की जळ देखो कूप में, की कामिनि सीस धरे॥

सावण सुदी सात्यु रे दिन जदि चांद रो च्यानणो घणो आछो हुवे अर्थात् बादळ होवे ही नहीं तो पाणी या तो कुए में मिलेगा या पनिहारियां रे सिर पर धरे घड़ों में।

सावण पहली पंचमी, जोर की चले वयार।
तुम जाणा पिउ मालवे, हम जेवें पितु-सार॥

सावण वदी पंचमी रे दिन जोर की हवा चाले तो हे पति तुम तो मालवे चले जाओ और मैं पीहर चली जाऊंगी । अर्थात काळ पड़ेगा ।

सावन कृष्ण पक्ष में देखो ।
तुल को मंगल होय विसेखो ॥
कर्क राशि पर गुरू जो जावै ।
सिंह राशि में शुक्र सुहावै ॥
ताल सो सोखै बरसै धूर ।
कही न उपजै सातो तूर ॥

सावण उजरे पाख में, जो ये सब दरसायँ ।
दुंद होय छत्री लड़ै, भिरैं भूमि पतिराय ॥

सावण वदी में तुला रो मंगल होवे, कर्क रो गुरु और सिंह रो शुक्रवार होवे । तो तालाब सूखजासी और आंधियां चालसी । किसी भी तरह री अनाज को ऊपजै नी ।

सावण सुदी में भी जदि अही लच्छण होवे तो भयानक लड़ाई होसी । राजा आपस में लड़सी ।

सावन सुक्ला सत्तमी, जो गरजै अधिरात ।
वरसै तो सूखा पड़ै, नाही समो सुकाल ॥

सावण सुदी सात्यूं रे दिन जदि आधी रात में बादल गाजे और मेह बरसे तो अकाल पड़सी । मगर बरसे-गाजे नहीं तो समो होसी ।

सावन पहिले पाख में, जो तिथि ऊणी जाय ।
कैयक कैयक देश में, टावर वेच्यो जाय ॥

सावण रे पहले पाख में जदि कोई तिथि टूट जाय तो कोई-कोई देश में मा आपरे टाबरां न वेच देसी । अर्थात् घोर काल पड़सी ।

—भादवा—

रवि उगंते भाद्वे, अम्मावस रविवार ।
धनुष उगंते पश्चिमें, होसी हाहाकार ॥

भादवे री अमावस रवीवारी पड़ ज्याय और सवेरे के समय पश्चिम में इन्द्रधनुष तण ज्याय, तो दुरमख काल पड़सी और दुनिया में हाहाकार मच ज्यासी ।

भादो की सुदि पंचमी, स्वाति संजोगी होय।
दोनो सुभ जोगै मिलै, मंगल बरतो लोय ॥

भादवा सुदि पंचमी रे दिन जदि स्वाती नखतर पड़ जाय तो लोग आनंद मनासी।

भादो मासे ऊजरी, लखै मूल रविवार।
तो यों भाखैं भड्डरी, साख भली निरधार ॥

भादवा सुदी में रविवार के दिन मूळ नखतर होवे तो फसल आछी होसी।

भादो वदी एकादसी, जो न छिटके मेघ।
चार मास बरसे सही, कहे भड्डरी देख ॥

भादवा बदी ग्यारस रे दिन जदि बादल न छिरे तो चार माह तक बरसा होवे।

भादरवे जळ रेलसी, जो छट अनुराधा होय।
पिछला गर्भ खड़ा करे, वर्षा चोखी होय ॥

भादवा वदी छठ रे दिन जदि अनुराधा नखतर पड़ ज्याय तो मेह री गिरतो थको गर्भ पाछो मंड ज्याय और मेह चोखो बरसे।

आसोजाँ रा मेहड़ा, दोयाँ बात विनास।
बोरड़ियाँ बोर नहीं, बिणया नहीं कपास॥

आसोज में मेह बरसणे से दो बातां रो घाटो पड़े। पहलो तो ओ होसी कि बोरड़्यां रे बोरिया को लागेनी। दूसरे कपास में रूई को पड़ेनी।

आसोज बदी अमावसी, जो आवै सनिवार।
समयो होवै फिर बरो, जोसी करो विचार॥

आसोज वदी अमावस रे दिन जदि शनिचर वार पड़ ज्याय तो समो आछो को होवे नी।

आसवानी। भागवानी।

या

आसोज में मोती बरसे

आसोज में मेह आछा भाग हुवे बांरे वठै वरसै।

या

आसोज में मोती बरसे।

सासू जितरें सासरो, आसू जितरे मेह।

जद तांई सासरे में सासू जीवे वितरे दिना हैं सासरे रो सुख है। बियाही आसोज तांई मेह री आशा है।

दो आस्विन दो भादों, दो असाढ के मांह
सोना चांदी वेचके, नाज वेसाहो साह

दो आसोज, दो भादवा जिके वरस में पड़े अर्थात् अधिकमास होवे, वीं वरस अकाल पड़सी। सोना - चांदी वेचर अनाज मोल लेल्यो।

नखतरां और राशियां रो प्रभाव

कृतिका तो कोरी गई, अद्रा मेह न बूंद ।
तो यो जानो भड्डरी, काल मचावे द्वंद ॥

कृतिका नखतर वे बरस्यो चल्यो जाय और आर्द्रा में भी एक ही बूंद को पड़े नी तो जरूर काल पड़सी ।

रोहणी माही रोहणी, एक घड़ी जो देख ।
हाथ में खप्पर मेदिनी, घर-घर मांगै भीख ॥

जदि चेत में रोहिणी नखतर में रोहिणी एक घड़ी रह ज्याय तो इस्यो दुरभख काळ पड़सी कि लोग खप्पर लेयर घर घर मांगता फिरसी ।

मृगसिर वायु न वाजिया, रोहिणी तपे न जेठ ।
गोरी वीनो कांकरा, खड़ी खेजड़ी हेट ॥

जदि न तो रोहिणी तपी और न ही मृग वाज्यो तो किरसाण री वहू खेजड़ी नीचे खड़ी कांकरा चुगसी ।

आर्द्रा तो वरसै नहीं, मृगसर पौन न जोय।

आर्द्रा नखतर में मेह नहीं वरसा और मृगसिर नखतर में पवन को वाजो नी तो एक बूंद ही मेह बरसणरी आशा को है नी।

जो चित्रा में खेलैं गाई।
निहचै खाली साख न जाई॥

गोरधन-पूजा रे दिन जदि चित्रा नखतर होवे तो शाख खाली को जावे नी।

आर्द्रा भरणी रोहिणी, मघा उतरा तीन।
दिन मंगल आंधी चलै, तवलों बरखा छीन॥

आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनों उतरा नखतरों में मंगल रे दिन आंधी चाले तो मेह रो जोर कम समझणो चाहिजे।

आगे मघ्घा पीछै भान।
वर्षा होवै ओस समान॥

मघा नखतर तो आगे होवे और सूरज होवे पाछे तो मेह बहुत ही कम बरससी।

कूही अमावस मूल बिन, बिन रोहिनी अखतीज।
स्रवन बिना हो स्रावनी, आधा उपजै बीज॥

अमावस रे दिन मूल नखतर न पड़े, आखातीज रे दिन रोहिणी नखतर न पड़े और सलूणे रे दिन (सावण सुदी पुनम) श्रवण नखतर न पड़े तो आधो निपजसी।

मृगसिर वायु न बादला, रोहिनी तपै न जेठ।
आर्द्रा जो बरसे नहीं कौन सहे अलसेठ॥

जदि मृगशिरा में न तो पवन चाले और न ही बादळ होवे, जेठ में रोहिणी तपै कोनी, तो आर्द्रा में खेती कर र क्यूं झींझट मोल लेवो। कारण समो को होवैनी।

जिही नछत्र में रवि तपै, तिही अमावस होय।
परिवा सांझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय॥

सूरज जिके नखतर में होवे उसी में अमावस भी पड़ज्याय और संज्या जदि एकम हो तो सूरज ग्रहण होवे।

जेष्ठा अद्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माहिं।
जो संक्रांति तो जानिये, महंगो अन्न बिकाय॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिसा, स्वाती और श्लेषा में सूरज री संक्रांति हो तो समझना कि अनाज मंहगो होसी।

रिक्ता तिथि औ क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रांति तो जानियो, संवत महंगो हो जात॥

रिक्ता तिथि और कड़े वार ने जदि दोपहर या सवेरे संक्रांति हो तो समझो साल महंगो रहसी।

मघादि पंच नछत्तरा, भृगु पच्छिम दिसि होय।
तो यों जानो भड्डरी, पानी पृथ्वी न जोय॥

मघा, पूर्वा, उतरा, हस्त और चित्रा नखतरां में जदि शुक्र आथूणी दिशा में होवे तो धरती पर मेह यो वरसे नी।

जिन वारां रवि संक्रमैं, तिनें अमावस होय।
खप्पर हाथा जग भ्रमैं, भीख न घाले कोय॥

जिण दिन सूरज री संक्रांति होवे और उणी दिन अमावस भी होवे तो लोग हाथ में खप्पर लेयर फिरसी कोई भीख भी को घालै नी।

स्वाती दीपक जो बरैं, खेल विसाखा गाय।
घना गयंदा रन चढै, उपजी शाख नसाय॥

स्वाती नखतर में दीवाली हो और काती सुदी एकम रे दिन विशाखा नखतर में चांद आज्यावे तो बड़ी भारी लड़ाई होसी और पकेड़ी फशल खराब हो ज्यासी ।

मास कृष्य जो तीज अंध्यारी ।
लेहू जोतिसी ताहि विचारी ॥
तिहि नछत्र जो पूरनमासी ।
निहचै चंद्र-ग्रहण उपजासी ॥

महीने रे अंधारे पाख री तीज रे दिन कौणसा नखतर है, ज्योतिषी इणने विचार ले । जदि उण ही नखतर में पुनम पड़ै तो अवश्य ही चांद गहण होसी ।

माघे मंगर जेठ रवि, जो सनि भादों होय
छत्र टूट धरती परै, की अन्न महंगो होय

माह रे महीने में पांच मंगल, जेठ रे महीने में पांच दीतवार और भादवे में पांच शनिवार पड़ै तो या तो राजा मरैला या अनाज मंहगो होसी ।

पांच सनिचर पांच रवि, पांच मंगल जो होय ।
छत्र टूटि धरनी परै, अन्न महंगो होय ॥

एक महीने में पांच शनिवार या पांच दीतवार या पांच मंगलवार पड़े तो या तो राजा मरसी या अनाज महंगो होसी।

आवत आदर ना दियो, जात न दीन्ह्यो हस्त।
तो दोनों पछतायंगे, पाहुन और गृहस्थ॥

आर्द्रा नखतर चढते समय और हस्त नखतर रे उतरती वेळा जदि मेह नहीं बरस्यो तो समो आछो को नी।

पावणे रो आती वेळा सत्कार को करयोनी और विदा होती वेळा क्यूं ही हाथ में नहीं दियो तो दोनों होपछतासी।

कर्क राशि में मंगल वारी।
ग्रहण करै दुर्भिक्ष विचारी॥

कर्क राशी में चांद होवे तब मंगलवार को चांद गहण हो तो काळ पड़सी।

गुरु वासर धन त्रर्पा करई।
धावर वारा राजा मरई॥

जब धन राशि में गुरु रे दिन चांद गहण हो तब

मेह बरससी । जदि दीतवार पड़ज्याय तो राजा मरसी ।

सनिचक्कर री सुणिये वात ।
मेष राशि भुगतै गुजरात ॥
वृष में करै निरोधा चार ।
भूवै आबू ओ गिरनार ॥

मिथुने पिंगल ओ मुलतान ।
कर्क कासमीर खुरसान ॥

जो सनि सिंहा करसि रंग ।
तो गढ दिल्ली होसी भंग ॥

जो सनि कन्या करै निवास ।
तो पूरब कछु माळ विनास ॥

तुला वृश्चिके जो सनि होय ।
मारवाड़ ने काट विलोय ॥

मकरा कुंभा जो सनि आवै ।
दीन्यों अन्न न कोई खावे ॥

जो धन मीन सनिचर जाय।
पवन चलै पानी जुनसाय ॥

–शनि रे चक्कर री बात सुणो–

शनि मेष राशि पर होसी तो गुजरात दुःख भो सी। वृष राशि पर होसी जद आबू और गिरनार प्र दुःख पायेंगे। मिथन पर होसी जद पोंगल देश और मु तान दुःख पासी। कर्क राशि पर होसी जद काश्मीर अं खुरासान पर संकट आसी। सिंह राशि पर होगा त दिल्ली रो राज भंग होसी। कन्या राशि पर होसी उ अगूणी दिशा न नुकसान पहुंचासी। वृश्चिक राशि पर हो जद मारवाड़ न भूख मारसी।

मकर और कुंभ राशियों पर होसी तो इस्यो सं आयर पड़सी कि कोई दीयोड़ो अन्न भी खा को सकेनी।

धन और मीन राशि पर होसी तो हवा जोर चालसी और काल पड़सी।

चढत जो बरसे चित्रा, उतरत बरसै हस्त।
कितनो राजा डांड ले, हारे नहीं गृहस्थ ॥

चित्रा नखतर रे चढते समय और हस्त नखतर

उतरती बेळा मेह बरसे तो इतरो आछो समो होसी कि राजा कितरो ही कर लेले फेर भी किसान थकै कोनी ।

हथिया बरसै चित्रा मंड़राय ।
घर बैठे किसान रिंरियाय ॥

हस्त नखतर तो बरस रह्यो होवे और चित्रा में बादळ मंड्योड़ा होवे तो किरसाण घरां बैठ्या गीत गासी ।

जब बरसेगा उत्तरा ।
नाज न खावे कुतरा ॥

उतरा नखतर में मेह बरस ज्यावे तो इतरो अनाज पैदा होवे कि कुत्ता ही धान को खावेनी ।

सावन सुक्र न दीसे, निहचै पड़े अकाल ।

सावण में शुक्र तारा अस्त हो ज्याय तो निश्चय ही काळ पड़ी ।

बरसे भरणी, छोड़ो परणी ।

भरणी नखतर में मेह बरसे तो विवाहिता को छोड़नी पड़सी क्योंकि काळ पड़ने के कारण विदेश जाणो

पड़सी।

रोहन रेली रुपयारी अधेली।

रोहणी में मेह वरसे तो आछी फसल आधी ही रहसी।

पहली रोहन जल हरै, दूजी बहोतर खाय।
तीजी रोहण तिण हरै, चौथी समन्दर जाय॥

जदि पहली रोहिणी में मेह वरसै तो काळ पड़सी दूसरी वरसै तो वहोतर दिनां तांई मेह को वरसेनो, तीसरी वरसै तो घास ही को उगेनी और चौथो वरसै तो मूसलाधार मेह वरसेला।

रोहन तपै नै मिरगला वाजै।
आदरा में अणचींत्यो गाजै॥

रोहणी में कड़ाकै रो तावड़ो तपै। मृगशिरा में आंधी चालै तो आर्द्रा में निश्चय ही मेह वरससी।

रोहण वाजै मृगला तपै।
राजा जूझै परजा खपै॥

रोहिणी नखतर में आंध्यां वाजे और मृगशिरा में

कड़ाकेरो तावड़ो तपै तो राजाओं में लड़ाई होसी और प्रजा रो विनाश होसी ।

मिरगा वाऊ न वाजिया, रोहन तपी न जेठ ।
केनै बांधो झोंपड़ो, बैठो खेजड़ो हेठ ॥

मृगशिरा नखतर में जोर री पवन न चाले और रोहिणी नखतर में कड़ाके रो तावड़ो न तपै तो खेत में झोंपड़ो बांवणो बेकार है खेजड़ो नीचे ही बैठ जाना । क्यों कि अ सुगन काळ रा है ।

दो मूसा दो कातरा, दो टीडी दो ताव ।
दोयां री वादी जल हरै, दो बीसर दो वाव ॥

मृगशिरा नखतर रे दिना में पहले दो दिना में पून न वाजै तो ऊंदरा घणा होसी । दूसरे दो दिना में नहीं बाजें तो कातरो होसी । तीसरे दो दिना में हवा नहीं चाले तो टिडी आसी । सातवें और आठवें दिन हवा न चाले तो लोगां न ताव चढसी । नवें और दसवें दिन हवा न वाजै तो मेह थोड़ो वरससो । ग्यारवें और बारवें दिन हवा न वाजें तो जहरीला कीड़ा जन्मसी । तेरवें और चौदवें दिन हवा नहीं चालै तो घणी आंध्यां बाजसी ।

खोड़ियो मृग अमूज्यो जाय ।
तो सावण रा दिन सतरा खाय ॥

मृगशिरा नखतर रो पछलो दिन अमूजेड़ो होवे तो सावण रा सतरा दिन गयां मेह बरसे ।

आदर खादर वाजै वाय ।
तो पड़ी झोंपड़ी झोला खाय ॥

आर्द्रा नखतर में आंधी वाजण लाग जाय तो खेत री झोंपड़ी खाली ही पड़ी रहसी । क्योंकि मेह को बरसे नी ।

एक आदरो हाथ लग जाय ।
जाट रो सुख कहां समाय ॥

जदि आर्द्रा नखतर में एक वार ही मेह बरस जावे तो करसां री खुशी री सीमा को रहवेनी ।

असलेखा वूठा, वैदां घरां वधावणां ।

अश्लेखा नखतर में मेंह बरससी तो रोग फैलसी ।

दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गुर सूर ।
डंक कहे हे भड्डली, निपजै सातों तूर ॥

काती सुदी पंचमी रे दिन जदि मूल नखतर में सोमवार, शुक्रवार या गुरुवार पड़ज्याय तो सातों प्रकार रो अन्न पैदा होसी ।

चांद-परीक्षा

जाड़े में सूतो भलो, बैठो वर्षा काल ।
गरमी में ऊभो भलो, चोखो करै सुकाल ॥

दूज रो चांद सियाळे में सूतो आछो, चौमासे में बैठ्यो और ऊंधाळे में खड़्यो शुभ होवे है ।

काती पूनम दिन कृति, चन्द्र मघा न जोय ।
आगे पीछे दाहिने, जिण सूं निश्चै होय ॥
आगे होय तो अन्न नहीं, पीछे होय तो ईत ।
पीठ हुया प्रजा सुखी, निसदिन रहो निचीत ॥

काती सुदी पूनम रे दिन देखो चांद रो बीच कौनें । आगे है या पीछे है या दाहिणी कानी है या बांई कानी है ।

जदि कृतिका आगे होसी तो अनाज कम निपजसी, दाहिणी कानी होसी तो उत्पात-बखेड़ा होसी, पीछे होसी तो प्रजा में सुख-शान्ति रहसी ।

सोमा सुकरां सुर गुरां, जो चंदो ऊगंत।
डंक कहे हे भड्डरी, जळ थळ एक करंत॥

सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार रे दिन जदि आसाढ में चांद उगै तो इतो जोर हूं मेह बरससी कि जळ थळ एकमेक कर देसी।

सावण तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ।

सावण में तो चांद सूतो आछो और आसाढ ऊभो।

आसाढे धुर अष्ठमी, चंद उगंतो जोय।
कालो वै तो करवरो, धोळो वै तो सुगाल॥
जो चंदो निरमल हवै, पड़े अचिंत्यो काल।

आसाढ वदी आठ्यु रे दिन उगते चांद न देखो वह काळे वादळां में हो तो साधारण, सपेद वादळां में होवे तो चोखो समो और जदि विना बादळां उगै तो जरूर काल पड़सी।

आधे जेठ अमावस्या, रवि आथिमतो जोय।
बीज जो चंदो ऊगसी, साख भरेला होय॥

उत्तर होय तो अति भलो, दक्खिन होय दुकाल ।
रवि माथे ससि आथमें, आघो एक सुगाल ॥

जेठ री अमावस्या रे दिन सूरज छिपै बीं जगह न याद राखो। जदि जेठ सुदी दूज रो चांद बीं जगा हूं उतराद कानी होवे तो समो चोखो होसी, बीं जगा हूं दिखणाद कानी होवे तो काळ पड़सी और जदि बीं ही जगां उगै तो समो साधारण रहसी।

पोह सबिंभल पेखजै, चैत निरमला चंद ।
डंक कहे हे भड्डली, मणहूता अन मंद ॥

पो में चांद बादळां में उगै और चैत में साफ उगै तो अनाज रुपये रो एक मण हूं ही सस्तो हो ज्यासी।

असाढ मास आठै अंधियारी,
जो निकळे चंदा जळधारी ।
चंदा निकले बादल फाड़,
साढे तीन मास वर्षा रो जोर ॥

आसाढ बदी आठ्यु रे दिन चांद बादळां न फाड़र उगै और बादळां हूं घीरीजेड़ो रहवे तो साढे तीन महीना तांई मेह जोर हूं बरसतो रहसी।

हवा - परीक्षा

होळी झळ रो करो विचार,
सुभ अरु असुभ कहौं फल सार
पूरब दिस री वहे जो वाळ,
कुछ भीजै कुछ करो जाय।
पच्छिम वायु वहे अति सुंदर,
समयो नीपजै सजल वसुंधर।
उत्तर वाय वहै दड़वड़ियां,
पिरथी अचूक पानी पड़िया।
दक्खिन वाय बहे धन नास,
समया नीपजे सनई घास।
जोर झकोरें चारों वाय,
दुखिया पिरथी जीव डराय।
जोर झलों आकासे जाय,
तो पिरथी संग्राम कराय।

–होळी रे दिन री हवा रो विचार–

अगूणी हवा चालसी तो कटै मेह बरस सी कटै को

बरसेनी। आथूणी हवा चाले तो घणी आछी। जमानो चोखो होवे। मेह घणो बरसे। दिखणादी पवन चाले तो जीव विनास होवे। उतरादी पवन चाले तो धरती पर जरूर मेह बरससी। च्यारू कानली पवन जोर हूं चाले तो दुःख बढसी। जदि हवा आकाश की ओर जोर हूं उठै तो लड़ाई होसी।

आसाढ मास पुन गौना,
धजा बांधर देखो पवना।
जो ये पवन पुरुब से आवै,
उपजै अन्न मेघ झड़ लावै।
अगन कोण हूं वहै समीरा,
पड़ै काल दुःख सहे शरीरा।
दखिन वहै जळ-थळ अलगीरा,
ताहि समय भूझै सब वीरा।
तीरथ कोन बूंद ना पड़ै,
राज्य - परजा भूखां मरै।
पच्छिम वहै नीक कर जानो,
पड़ै तुषार तेज उर मानो।

वायव वहै जळ थळ अति भारी,

मूस उगाह दंड बस नारी।

उत्तर उपजै बहु धन धान,

खेत घास सुख करै किसान

कोन इसान दुंदभी बाजै,

दही भात भोजन सब गाजै।

आसाढ री पूनम रे दिन में झंडी खड़ी करर हवा री रुख देखो—

अगूणी पवन चाले तो समो आछो होसी। मेह घणो बरससी। अग्नि कोण (पूर्व-दक्षिण) री हवा बाजे तो काल पड़सी और शारीरिक कष्ट भी होसी। दिखणादी पवन बाजे तो इतरो वर्षा होसी कि जल-थळ एक हो ज्यासी और उणी समय बड़ा-बड़ा योधा लड़ मरसी। नैर्ऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) री हवा होवे तो मेह को बरसे नी। राजा और प्रजा दोनों ही भूख मरसी। आथूणी पवन बाजतो होवे तो जमानो घणो आछो होसी। पर जाडो जोर रो पड़सी। वायव कोण (उत्तर-पश्चिम) री हवा होवे तो मेह घणो बरससी पर ऊंदरा घणा जन्म ज्यासी और घणो घाटो घालसी। महिलाओं को ज्यादा तकलीफ

रहसी। उतरादी हवा बाजसी तो धन-धान्य री पैदावार घणी आछी होसी। किरसाण घणो आनंद लूंटसी। ईशान-कोण (पूर्व-उत्तर) री हवा चाले तो जमानो श्राछो होणे रे कारण हूं ब्याह-सगाई घणी होसी, नगारा बाजसी और लोग दही भात खायर मस्त रहसी।

सब दिन बरसे दखिना वाय।
कभी न बरसे बरखा पाय॥

दिखणादी हवा हूं चोमासे न छोडर सगली मोसमा में मेह बरसे।

फागण मास बहे पुरवाई, तब गोहूं में गेरुई धाई।

फागण रे महीने में पर्वा पवन चाले तो गेहूं री फसल में गेरुई रोग लाग ज्याय।

दखनी कुलछिनी। माघ-पूष सुलछिनी॥

दिखणादी पवन आछी को होवे नी। पर पो-माह में बाजै तो लाभकारी रहवे।

वायू में जब वायु समाय।
घाघ कहे जल कहां अमाय॥

जद हवा रे मायने ही हवा रा झोंका आण लाग जाय, तब घाघ कहता है कि इतरो पाणी कठै ठहरसी।

सावण मास सूर्यो चाले, भादूड़े पर वाई।
आशोजां में पछवा चाले, काती शाख सवाई॥

सावण रे महीने में तो सूर्यो (पछिम-उत्तर रे कोण री) वाजे, भादवे में परवाई चाले और आशोज में पिछवा हवा चाले तो काती में सवायो जमानो हो जाय।

मेह रा - लछण

पूरब रा घन पच्छिम चलै।
रांड वातां हंस-हंस करे॥
घो बरसै वा करे भरतार।
भड्डर रे मन यही विचार॥

जदि अगूण हूं बादल आयूणी ओर जाण लाग जाय और विधवा लुगाई हंस-हंस र बातां करे तो वो बादल तो बरससी और वा किसी मिनख सूं सम्बन्ध जोड़ लेसी।

तीतर पंखी बादली, रहे गगन पर छाय।
डंक कहे सुण भड्डरी, बिन बरसे नहीं जाय॥

जदि तीतर री पांखा रे तरह री लहरदार बादली आकाश में छायेड़ी होवे तो बा बिन बरसे को जायनी।

शुकर केरी बादली, रहे शनिश्चर छाय।
सदेव कहे है भड्डरी, बिन बरसे नही जाय॥

शुक्रवार री मंडेड़ी बादली सनिवार तांई छायेड़ी रहे तो बा बिना बरसे को जायनी।

तीतर पंखी बादली, विधवा काजळ रेख।
वा बरसै वा घर करै ई में मीन न मेख॥

तीतर री पांख्या जसी बादली होवे और विधवा लुगाई री आंख्यां में काजल घालेड़ो होवे तो बा बरससी और बा घर मांडसी। इये में न तो मीन है और न मेष है।

पवन थक्यो तीतर लवै, गुरहि सदेवै नेह।
कहत भड्डरी जोतिसी, वा दिन बरसे मेह॥

हवा थम ज्याय, तीतर जोड़ा खाते हों, गुड़ चीकणो ज्याय तो उण दिन मेह बरससी।

कळसे पानी गरम हो, चिड़िया न्हावे धूर।
अंडा ले कीड़ी चलैं, तो रखा भरपूर॥

जदि घड़े में पाणी गरम हो ज्याय, चिड़यां धूड़ में
नहावण लाग जाय और कोड़चां अंडा लेयर जावण लाग
जाय, तो समझो मेह घणो वरससी।

बोले मोर महातुरी, खाटी होय जु छाछ।
मेह मही पर पड़न को, जानो काछे काछ॥

जदि मोर जल्दी-जल्दी बोले, छाछ खाटी हो ज
तो समझो मेह वरसने की तैयारी कर रह्यो है।

कर्क के मंगल होयं भवानी।
दैव धूर वरसेंगे पानी॥

जदि सावण में कर्क राशि पर मंगल हो तो मे
जरूर वरससी।

सूरज तेज सतेज आड वोजे अनयाली।
मही माठ गळ जाय पवन सिर वैठे छयाली॥
कीड़ी मेलें इंड चिड़ी रेत में नहावें।
कांसी कामन दौड़ आम लीलो रंग आवे॥
डेडरो उहक धाड़ां चढे, निसहर चढि चढि वैठे बड़
पांडियां जोतिस झूठा पड़े, घन वरसे इतरा गुणा

तावड़ो जोर हूं तपण लाग जाय, बत्तख जोर हूँ लाग जाय, बकरी हवा न पीठ देयर बैठ जाय, अंडा लेयर जाण लाग जाय, चिड़चां घूड़ में नहा-ज्याय, कांसी रो रंग नीलो पड़ ज्याय। डेडरा बड़न लाग ज्याय और सांप पेड़ पर चढ़ ज्याय तो ससी। जोतस झूठी हो सके है, पर अ लक्षण झूठा सकेनी।

त्रिथलियां बोलैं रात निमाई।
छाती बाड़ां वेस छिकाई॥
गोहां रांग करै गरणाई।
जोरा मेह भोरां अजगाई॥

सारी रात भींभरचा बोले, बाड़ रे कनै बैठर छींक करे, गोई जोर हूं चिल्लाण लाग जाय और ोले तो मेह बरससी।

काळिया वादळ जीव डरावे।
भूरे वादळ पाणी आवे॥

काळा वादळ तो खाली डरावे ही है। पर भूरे ादलां हूँ मेह आवे है।

उत्तर चमके बीजळी, पूरब वहनो बाउ।
घाघ कहे भड्डर से, बळद भीतर लाउ॥

उतराद कानी बिजली खींवती होवे और परवा पवन चाले तो बळद मायने बांधदो मेह जरूर बरससी।

चमके पच्छिम उतर ओर।
तब जानो पानी है जोर॥

उतरादी और आथूणी दिशा में बिजळी चमके तो मेह बरससी।

पहला पवन पूरब से आवै।
बरसे मेघ अन्न झरि लावै॥

आसाढ रे महीने में पहले परवाई चाले तो बरसेला और अन्न बहुत होवेला।

भल भल बके पपइयो बाणी।
कूंपल कैर तणी कमलाणी॥
जलहलतो उगो रवि जाणी।
पहरा माय ओसरे पाणी॥

पपीहा च्यारों मेर पी-पी बोलता फिरे, और

कुंपळा कुम्मलाइज जाय, और उगता सूरज जोर हूं तपै। तो समझना चाहिजे कि एक पहर र मांय-मांय मेह बरसेला।

आभो रातो, मेह मातो।

आकाश का रंग लाल हो तो मेह अधिक बरसे।

ऊगन्तेरो माछलो अथवंतो मोग।
डंक कहे हे भड्डली, नदियां चढसी घोग॥

उगतो सूरज तो माछला फेंके और विश्वोंजतो फेंके मोग। तो इसी जोर हूं बरसा होसी कि नदियां में पाणी नावड़े कोनी।

दुश्मण री कृपा बुरी, भली सजन री त्रास।
आडंग कर गरमी करे, जद बरसण री आस॥

बैरी री दयाहूं मित्र री फटकार आछी होवे है—इयांही बादळ मंडर गरमी होवे, जद,ही मेह आणे री उम्मेद बढे है।

संवेरे रो गाजियो, नें सापुरुष रो बोलियो।
अळ्यो को जावेनी।

दिनुगे रो गाजेड़ो और सत्पुरुष री जबान ताती को जायनी।

पाणी, पाळो और पारसा उत्तर हूं ही आवे है।

मेह, ठंड और बादशाह उतराद हूं ही आवे है। (भारत पर परदेस्यां री चढाई घणी वार उतरादी और आथूणी कूंट हूं ही हुई ही)

नाडी जल ह्वै तातो न्हाली।
थिरक रवै नीलो रंग थाली॥

चहक चैठ सीरे चूंचाली।
कांठळ बंधे उत्तर दिस काळी॥

जिण दिन नीली वळे जवासी।
मांडे राड़ वाघ री मासी॥

वादळ रहे रात रा वासी।
तो जाणो चोकस मेह आसी॥

जोड़े रो पाणी तातो हो ज्याय, कांसी री थाळी नीली हो ज्याय, पनडुबी पेड़ पर चढर बोलण लाग ज्याय, उतराद कानी काळो कळायण मंड ज्याय, रात रा वादळ

दिनुगे तांई मंडेड़ा रहवे, हरचो जवासो बळ ज्याय और मिनड़चां आपस में लड़न लाग ज्याय। तो समझना चाहीजे कि मेह जरूर बरससी।

विरछां चढ किरकट विराजे।
स्याह सपेद लाल रंग साजे॥
विजनस पवन सूरया वाजे।
घड़ी पलक माही मेह गाजे॥

किरड़ो रूंख माथे चढ बैठ ज्याय और काळो, पेद और लाल रंग बणाले और सूर्यो बाजण लाग ज्याय ो समझणा चाहीजे कि घड़ी पलक में हो बरसण लाग ज्यासी।

ऊंचो नाग तर ओड़े।
दिस पछिमाण बादळा दौड़े॥
सारस चढे असमान सजोड़े।
तो नदियां ढाहा जल तोड़े॥

सांप दरखत री टोखी पर चढ ज्याय, बादळ आथूण कानी जाण लाग ज्याय, सारसां रा जोड़ा आकाश में उडण लाग ज्याय। तो जाणो कि नदियां रो पाणी

किनारा तोड़र वाहिर आज्यासी ।

ऊमस कर घृत माठ जमावै ।
ईंडा कीड़यां वाहिर लावै ॥
नीर विना चिड़ियां रज न्हावै ।
मेह वरसे घर मांझ न मावै ॥

गरमी हूं घड़े में घी पिघळ जाय, कीड़यां ग्रंडा लेयर वाहिर आज्याय और चिड़यां रेत हूं नहावण लाग ज्याय, तो समझो कि इस्यो जोर हूं मेह वरससी कि घर में पाणी ना वड़े कोनी ।

जटा घढै वड़ री जद जाणां ।
वादळ तीतर पंख वखाणां ॥
अवस नील रंग ह्वै असमाना ।
घण वरसे जळरो घमसाणा ॥

वड़ रे पेड़ हूं जटा वढण लाग ज्याय, वादळ तीतर री पांखा जिस्या हो ज्याय और ग्राभै रो रंग नीलो हो ज्याय तो घमासाण मेह वरससी ।

उतरे जेठ जो वोले दादर ।
कहे भड्डरी वरसे वादर ॥

उतरते जेठ रे महीने में मेंढक बोलण लाग ज्याय तो मेह चोखो बरसे।

अगहन द्वादसी मेघ अखाड़।
असाढ़ बरसे अछना धार॥

मिगसर वदी बारस रे दिन जदि बादळां री जमघट होवे तो आसाढ में जोर री वर्षा होसी।

उल्टो गिरगिट ऊंचे चढ़ै।
बरखा होइ भूइं जल बुड़ै॥

जदि किरड़ो उल्टो रूंख पर चढ़ै तो समझना चाहीजे कि इसी जोर हूं बरसा बरससी कि धरती पर पाणी नावड़े कोनी।

ढेले ऊपर चील जो बोलै।
गली गली में पाणी डोलै॥

जदि चील कच्चे डगळिये पर बैठ र बोलण लागे तो समझो कि इस्योड़ी बिरखा आसी कि गळी-गळी में पाणी ही पाणी हो ज्यासी।

उल्टा बादळ जो चढै, बिधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहैं सुण भड्डरी, वह बरसे वह जाय॥

जद परवाई पवन रे सामने बादळ चढण लाग ज्याय और विधवा लुगाई खड़ी खड़ी न्हावण लाग ज्याय, तो समझो मेह बरससी और वह किणी दूसरे मरद रे साथ चली जासी।

सांझे धनुष सकारे मोरा।
ये दोनों पानी के बोरा॥

सांझ ने इन्द्रधनुष दिखाई पड़े और सवेरे मोर बोले तो मेह घणो बरससी।

पूनो पड़वा गाजै।
दिन बहोतर बाजै॥

आसाढ री पूनम और पड़वा ने बिजली चमके तो बहत्तर दिनों तक मेह बरससी।

आगू में जब बाऊ समाय।
कहे घाघ जळ कहां अमाय॥

एक ही समय में आमने सामने हवा बाजे तो बड़ी जोर की वर्षा होगी।

जेठ मास जो तपै निरासा।
जब जानो बरसा री आसा॥

जेठ रे महोने में कड़ाके री गरमो पड़े तो मेह री आशा करो।

सावन पहली पंचमी, झीनी छांट पड़ै।
डंक कहे हे भड्डली, सफला रूंख फळै॥

सावण बदी पांच्यू रे दिन जदि मेह रा फंवारिया पड़े तो मेह चोखो बरससी फळां वाले रूंखा में फळ लागसी।

सावण मास सूरियो बाजै, भादरवे परवाई।
आसोजा में पिछवा बाजै। काती साख सवाई॥

सावण में सूरियो, भादव में परवाई और आसोज में पिछवा हवा बाजै तो काती में पैदावार सवाई होसी।

सोमा, सुकरां, बुध गुरां, पूरवां धनुष तणै।
तीजे चौथे देहरै, समदर ठेल भरै॥

सोमवार, शुक्रवार, बुधवार और गुरुवार रे दिन अगूणी कानी धनुष तण ज्याय तो उण रे तीसरे चौथे दिन इतरो जोर हूं मेह बरससी कि समुदर भर ज्यासी।

जो बदरी बादर में खमसे।
कहैं भड्डरी पानी बरसे॥

बादल मंडग्यो हूं जदि गरमी घणी हो ज्याय तो समझो मेह वरसेला।

चमकी भलो न चैत में, बूठ्यो भलो न जेठ।
रूठ्यो भलो न राजवी, तूठ्यो भलो न सेठ॥

चेत रे महीने में तो चमकेड़ो आछो कोनी। जेठ में वरसेड़ो आछो कोनी। इयां ही राजा तो नाराज होणो आछो कोनी अर सेठ राजी हुयेड़ो।

चैत मास उजाळे पाख।
नो दिन बीज लुकाई राख॥
आठ्यूं नोम्यू निरख कर जोय।
जहा बरसे जहां दुर भख होय॥

चेत रे उजाळ पखवाड़े में नो दिन बीजली नहीं चाहिजे। खासतोर हूं आठयुं-नवमी न देखो जठै बरसात वठै काल पड़सी।

सांवण पहली सूद न्यू, न बादळ न बीज।
करसा करसण छोड़ दयो, मत गमाओ बीज॥

सावण हूं पहलो सुदी नवमी रे दिन न तो बादल

हो नहीं बीजली दिखाई पड़ै तो हे खेतीखड़ो खेती करना छोड़ दो, बीज मत गमाओ, काल पड़ेला ।

पहली पड़वा गाजै, दिन बहोतर बाजै ।

आसाढ री पहली पड़वा रे दिन बादल गाजै तो बहोतर दिनां तक आंधियां चालती रहै ।

परवाई पर पिछयूं फिरै ।
घर बैठी नार घड़ो भरै ॥

परवाई पवन पर पिछवा पवन चालण लाग ज्याय तो इतरो मेह बरससो कि पणिहारी घरां बैठी हो घड़ो भर लेसी ।

सूरज कुंडाळो, चांद जळेरी ।
टूटै टीबा भरै डैरी ॥

सूरज रै चारों ओर तो कुंडाळो होवै और चांद जळेरी होवै तो इस्यो जोर हूं मेह बरससी, टीबा टूट ज्यासी और डैरया पाणी हूं भर ज्यासी ।

सावण पहलो सूद न्यू, न बादल नबीज ।
ढांडा ढोरा सामल्यो, भेळो करल्यो बीज ॥

सांवण पहली पंचमी, मेह मंडियो असराळ।
थिरचक थाणा रोपद्यो, हळ ले खेता हाळ॥

आषाढ सुदी नवमी रै दिन जदि न तो बादल ही होवै और न ही बिजळी चमकती दिखाई पड़ै तो पशुओं नै सम्भाळो और बीज खोवो मत। निश्चय ही अकाल पड़ैला।

सावण वदी पंचमी रै दिन जदि जोर री घटा उमट रयाय। तो जमानो होसो। खेतां में हल जोत दयो। फठै ही आणे-जाणे रो जरूरत को है नी।

मेह न बरसणे रा लछण

रात निर्मळी दिन कै छाही।
कहैं भड्डरी वर्षा नाहीं॥

रात तो होवे साफ और दिन में बादळ मंडेड़ा रहवे तो भड्डरी कहवे है कि मेह को बरसे नी।

सवेरे गह डम्बरा, संझ्या शीळी वाळ।
सदेव कहै हे भड्डरी, अह काळा तणा अहनाण॥

सवेरे तो बादळां री घटा छा जावे और संज्या रे समय ठंडी हवा बाजण लागज्या तो अह लछण काळ रा है।

उदित अगस्त पंथ जळ सोखा।

अगस्त तारे रे उदय होने पर मारगां रो पाणी सूख ज्यावे है। अर्थात् मेह बरसणो बंद हो ज्यावे है।

अगस्त ऊगा और मेह पूगा

अगस्त उग्यो और मेह गयो ।

आभो पीळो मेह सीळो

आकाश रो रंग पीळो हो ज्याय तो मेह बल्यो जाय ।

परभाते मेह डम्बरां दोपहरा तपंत ।
रात् तारा निरमला; चेला करो गछंत ॥

सवांरे बादल दौड़े, दोपारां तावड़ो तपै और रात ने साफ तारा दिखाई दे तो चेजो अठै हूं भाग चालो । काळ पड़सी ।

दिन में गरमी रात में ओस ।
कहे घाघ वर्षा सौ कोस ॥

दिन में तो गरमी पड़े भौर रात ने ओस, तो घाघ कहते हैं कि मेह चला गया ।

रात निबद्दर दिन को घटा ।
घाघ कहे अब वर्षा हटा ॥

रात में तो आकाश साफ रहे और दिन में घटा घिरेड़ी रहे तो समझो बरसा गई ।

दिन में बादळ रात में तारे ।
चलो कंत जहां जीवे वारे ।।

जदि दिन में तो बादल मंडेड़ा रहे और रात ने तारा दिखाई पड़े तो हे स्वामी बठै चालो । जठै टाबरां न जिवा सकां क्योंकि अठै तो काळ पड़सी ।

काळ री पहचाण

रात् बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल ।
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै पड़ै अकाल ॥

रात ने तो बोलै कागला और दिन में बोलै स्याळिया तो भड्डरी कहवे है कि जरूर काळ पड़सी ।

एक मास में ग्रहण जो दोई ।
तो भी अन्न महंगो होई ॥

जदि एक ही महीने में दो गहण हो ज्याय तो अनाज महंगो होसी ।

गहतो आथे गहतो ऊगै ।
तोऊ चोखी साख न पूगै ॥

गहतो छिपै या गहतो उगै तो समझो समो चोखो को होयेनी ।

तेरह दिन रो देखो पाख।
अन्न महंगो समझो वैसाख॥

एक पखवाड़े में जदि तेरह ही दिन होवे तो बैशाख में अनाज महंगो होणे रो लक्षण है।

छः ग्रह एकै राशि विलोको।
माह काल रो दीन्हो कोको॥

एक ही राशि पर जदि छः ग्रह एक ही साथ पड़ ज्याय तो समझो महाकाळ ने न्यौतो दियो है।

माघ मास जो पड़े न सीत।
महंगा नाज जानियो मीत॥

माह रे महीने में जदि पाळो नहीं पड़े तो हे मित्र अनाज मंहगो होसी।

मंगल पड़े तो भू चलै, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल॥

फागण महीने री आखिरी तिथि रे दिन जदि मंगलवार पड़े तो धरती धूजै, बुधवार पड़े तो अकाल पड़े और जदि शनिवार पड़ ज्याय तो जरूर ही अकाल पड़े।

सावण सुक न दीसै, निहचै पड़े अकाल ।

सावण रे महीने में जदि शुक्र तारो अस्त हो ज्याव और दिखाई न पड़े तो जरूर अकाल पड़सी ।

घण जाया कुळ हाण, घण वूंठा कण हाण ।

घणा जनम्यां वंश रो नास होवे और घणो बरस्यां अन्न रो नास होवे ।

भोर समय गड्डम्बरा, रात उजेरी होय ।
दोपारां सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय ॥

सवारे बादल छायाड़ा रहवे, रात में अकास साफ रहवे और दुपारी तावड़ो तपै तो दुरखन काळ रा सगण जाणो ।

सावण पहली पंचमी, जो बाजे पहुवाय ।
काल पड़ै सउ देस में, मिनख मिनख न खाय ॥

सावण वदी पांचु रे दिन जदि जोर री हवा बाजै तो सारे देश में इस्यो काळ पड़सी कि मिनख मिनख न खाण लाग ज्यासी ।

माघ मास सनि पांच हो, फागुन मगल पांच ।
काल पड़ेगा भड्डरी जोतिस को मत सांच ॥

माह रे महीने में पांच सनिवार होवे और फागुण में पांच मंगल तो काळ पड़सी। भड्डरी कहवे है कि जोतिष रो ओ साचो मत है।

मंगळ सोम होय शिवराती।
पछवा पवन चले दिन राती॥
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ै।
राजा मरै कि परती पड़ै॥

शिवरात्री जदि सोमवारी या मंगलवारी पड़ै तथा दिन रात आथूणी हवा वाजती रहवे, तो कीड़ो मकोड़ा और टिड्डियां पैदा होसी, राजा मरेला और बिना वाया खेत पड़्या रहसी।

माघ में गरमी जेठ में जाड़।
कहैं घाघ हम होय उजाड़॥

माह रे महीने में तो पड़े गरमी और जेठ में पड़े पाळो तो घाघ कवि कहवे है कि मेह को बरसे नी।

एक बूंद जो चैत में पड़ै।
सहस बूंद सांवणरी हरै॥

चेत रे महीने में जदि एक भी बूंद पड़ ज्याय तो

सावण में हजारों बूंदा रो घाटो पड़ ज्यासी।

जब बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय॥

जदि चित्रा नखतर में मेह बरस जाय तो समझना चाहिये कि सारी खेती उजड़ जासी।

सावण शुक्ला सत्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहे घाघ सुण घाघणी, पहुमी खेती खोय॥

सावण रे उजाळे पाख री सातूं रे दिन जदि अकास साफ होवे तो घाघ घाघणी ने कहवै है कि धरती पर खेती को होवेनी।

सावण वदी एकादसी, तीन नखत्तर जोय
कृतिका होय तो किरवरो, रोहिणी होय सुगाल।
टुकयक आवे मिरगला, पड़े अचिन्तयों काल।

सावण रे अंधेरे पाखरी ग्यारस रे दिन तीन नखत देखो। जदि कृतिका नखतर होवे तो मेह साधारण बरससी जदि रोहिणी नखतर हो तो आछो समो होसी और मृगशिर नखत्तर जदि थोड़ो सो ही पड़ ज्याय तो इस्यो काल पड़सी जिके रो किणी न उम्मेद ही को ही नी।

सावण पहले पाख में, जे तिथि उणी जाय।
कैयंक कैयक देस में, टाबर बेचै माय ॥

सावण रे पहले पाख में जदि तिथि टूट ज्याय तो किणी किणी देश में मां आपरे बेटे न बेच देसी।

मिगसर वद वा सुद महीं, आधे पो उरे।
धूंवर न भीजे धूळ तो, करसण काह करे ॥

मिगसर बदी या सुदी में आधे पो हूं पहले जदि धंवर हूं जमीन न भीजै तो हे खेतीखड़ खेती क्यूं करो हो।

माहे मंगल जेठ रवि, भादरवे सनि होय।
डंक कहे है भड्डली, विरला जीवे कोय ॥

माह रे महीने में पांच मंगलवार, जेठ रे महीने में पांच दीतवार और भादवे रे महीने में पांच शनिवार पड़ ज्याय तो एड़ो काळ पड़सी कि शायद ही कोई जीवतो बचे।

मंगल रथ आगे हुवे, लारे हुवे जो भान।
असाभिया यूं ही रहे, टाली रवै निवाण ॥

सूरज हूं आगे मंगल हो ज्याय तो तमाम आसाम्रों पर पाणी फिर ज्यासी । तालाव सूखा पड़्या रहसी ।

रोहण तपै मिरग बाजै ।
तो आदर खादर अवश्य गाजै ॥

रोहिणी नखतर में तावड़ो तपै और मृगशिरा नख-तर में हवा बाजे तो आर्द्रा नखतर में जरूर मेह बरसेला ।

खेती री कहावतां

खेती

खेती भारत रे निवासियां रो खाश धंधो है। आर्य जो भारत रा मूल निवासी हा खेती ही कर्‌या करता हा। उणां रे जुग में इतरो अनाज, दूध, शक्कर ग्रौर फळ होता जिका खाणे हूँ खूटता कोहानी। वाने खटोवण खातर दूसरा बहाना बणावणां पड़्या। जियां अतिथि-सेवा अर्थात् अतिथि नै देवता रै समान ही मान र उणनै भोजन देणो; उपवास, पूजा-पाठ वगैरह मांगलिक कामां में जौ, चावल ग्रौर दही खर्च करणो; दोनु वखत होम करणो। फल, गुड़ और दूध रा दाम न लेणा।

आज हूं थोड़ा बरसां पहल्यां तांई, आपणे अठै रा देहाती भाई दूध और काकड़िया-मतीरा बेच्या को करता हानी। वां रे घर या खेत पर कोई भी पहुंच ज्यातो तो वोंरी देवता रै समान ही सेवा कर्‌या करता हा। पण आज आ बात को रही नी। जिका भाई कह्‌या करता हा

सूरज हूं आगे मंगल हो ज्याय तो तमाम आशाओं पर पाणी फिर ज्यासी। तालाब सूखा पड़्या रहसी।

रोहण तपै मिरग बाजै ।
तो आदर खादर अवश्य गाजै ॥

रोहिणी नखतर में तावड़ो तपै और मृगशिरा नखतर में हवा बाजे तो आर्द्रा नखतर में जरूर मेह बरसेला।

खेती री कहावतां

खेती

खेती भारत रे निवासियां रो खास धंधो है। आर्य जो भारत रा मूल निवासी हा खेती ही करचा करता हा। उणां रे जुग में इतरो अनाज, दूध, शक्कर और फळ होता जिका खाणे सूं खूटता कोहानी। बातं खटोवण खातर दूसरा बहाना बणावणां पड़्या। जियां अतिथि-सेवा अर्थात् अतिथि ने देवता रे समान ही मान र उणनं भोजन देणो; उपवास, पूजा-पाठ वगैरह मांगलिक कामां में जौ, चावल और दही खर्च करणो; दोनु वखत होम करणो। फल, गुड़ और दूध रा दाम न लेणा।

आज सूं थोड़ा बरसां पहल्यां तांई, आपणे अठै रा देहाती भाई दूध और काकड़िया-मतीरा बेच्या को करता हानी। वां रे घर या खेत पर कोई भी पहुंच ज्यातो तो वींरो देवता रे समान ही सेवा करचा करता हा। पण आज आ बात को रही नी। जिका भाई कह्या करता हा

कि दूध और पूत वेचण न को होवे है नी—वही माई आज दूध वेच रह्या है। पण ओ वांरो दोप कोनी जमाने रो दोष है। जमानो चलावै वींया ही चालणो पड़ै है।

जिका भाई हळसोतिये रे वखत हळ रै माथै हाथ मेलता ही सहूँ पहली भगवान हूँ आ ही विणती करता हा और शायद आज भी करै है कि—"हे भगवान कीड़ी-मकोड़ी, जीवां-जूणा और बटाऊ रै भाग रो अनाज देई।" कीड़ी-मकोड़ी तथा दूसरी जीवां-जूण तो खेती में हूं थोड़ो-घणो भाग जोरचामरदी ले ही लेवै है। पण बटाऊ नैं तो इये जमानै में खेत में आज रो यो ही हालो जिको भगवान कानैं हूँ बटाऊ रै वास्तै भी उपज मांगै है। पग ही को देवण देवै नी। खैर अह सारी वातां जमानो ही कराय रह्यो है। किणी न ही इये रो दोप को है नी।

पुराणै जमाने में खेती रो धर्म रे साथै इस्यो सम्बन्ध जोड़ दियो हो कि यह कह्या करता हा कि "खेती मनुष्य-समाज रे सुखां री मा है।"

पराशर मुनि ने कहा है—

अत्र स्त्रत्वं निरन्नत्वं कृपितो नैव जायते।
अनाति थयञ्च दुःखित्वं दुर्मनो न कदाचन॥

खेती करने वालों ने अनाज और कपड़े रो कदेई कष्ट को होवै नो। अतिथि-सेवा में कमजोरी तथा दूसरा दुःखां हूं उणरो मन कदेई दुःखी को होवैनी।

सुवर्ण रौप्यमाणिक्य वसनैरपि पूरिताः।
तथापि प्रार्थयन्त्येव कृषकान् भक्त तृष्णया॥

सोना, चांदी, माणिक और कपड़ा वगैरह हूं धापेड़ा मिनखां न भी भोजन रे पदार्थां री मांग किरसाणा हूं करणी पड़े है।

अन्न प्राणो बलं चान्न मन्नं सर्वार्थ् साधकम्।
देवासुर मनुष्याश्च सर्वे चान्नोप जीविनः॥

धान ही जीवण है, धान ही ताकत है, और धान ही सगळां कामां न पूरो करणो वाळो है। देवता, मिनख और राक्षस सारा रा सारा धान हूं ही जीवै है।

अन्न तु धान्य संभूतं धान्य कृष्या विना न च।
त स्मात्सर्व परित्यज्य कृषिं यत्नेन कारयेत॥

भोजन धान हूं बणे है, धान खेती बिना मिले कोनी। इये कारण हूं ही दूसरा सगळा धन्धा छोडर सब हूं पहलो खेती रो धंधो करणो जरूरी है।

आज भी संसार में सारा रा सारा व्यापार अना
पर ही आधारित है। अनाज रे लिये ही भगड़ा हो रहे
है और मेळ जोळ भी अनाज रे वास्ते ही राखीज रहे
है। पण अनाज री प्राप्ति खेती बिना असंभव है।

खेतीखड़ां रा खेती सम्बन्धी अणभव घणा पुराण
है। वाँ आपरा अणभव रोज री बोलचाल में छोटी छो
कहावत रे नाम हूं संसार न दान रे रूप में दे राख्या है
ओ धन उण ने विरासत रे रूप में पीढी दर पीढी मिलत
आ रह्यो है।

भारत में घणी सारी बोल्यां बोलीजे है। खेती
खड़ां री अह कहावतां सगळी ही बोल्यां में न्यारी-न्यार
बोलीजे है। पर अणभव सगळां रा एक जिस्या ही है
खाली बोल्यां रा ही न्यारा-न्यारा रूप दिखेड़ा है।

गांवा में कहावतां रो घणो प्रचार है। घाघ औ
भड्डरी री ही नहीं सैकड़ों दूसरा अणभवी लोगों री कह
वता भी मिले है। गांव वासियां रो जीवन कहवतां रो ह
जीवन है। कहावत ही उणांरो मंत्र है।

खेती री कहावतां में हळ, बळद रे सिवाय खाद
जुताई, बुआई, सिंचाई, निनाण और कटाई सम्बन्धी
दूसरी कहावतां भी घणी ही मिले है। अठै जिकी कहावत

मने मिली है—वह ही में दे रहयो हूँः—

उत्तम खेती मध्यम बान।
निखद् चाकरी भीख निदान॥

खेती रो धंदो सगळा हूं घणो आछो है। बोपार बीच रो काम है और नौकरी नीचो काम है। भीख मांगणे रो काम तो सगळा हूँ ही बुरो काम है।

वाढै पूत पितारे धर्मा।
खेती उपजै अपने कर्मा॥

बेटे री उन्नति बाप रे धर्म हूं होवे है। पण खेती तो आपरे ही उधम रो फळ है।

दस हळ राव, आठ हळ राणा।
चार हळो रा बड़ा किसाना॥
दो हळ खेती, एक हल वाड़ी।
एक बैल हूं भली कुदारी॥

जिण खेतीखड़ रे खेत में एक साथे दस हल चाले है वो राव है। जिकेरे आठ हल चाले है वो राणो है। च्यार हळां वालो खेतीखड़ बडो किरसाण है। दो हळां हूँ पेट

फाढलो और एक हळ हूं खाली वाड़ी में साग-सब्जी ही लगाइजे है और जिण कने खाली एक बळद है वाँ हूं तो आछी गेंती ही है।

एक हळ हत्या, दो हळ काज।
तीन हळ खेती चार हळ राज॥

एक हल हूं तो बळदा न मारना ही है, दो हळां हूं किणी तरह काम चलायो जा सके है। तीन हळां हूं खेती हो सके है, पण च्यार हळां वालो किसाण तो राज ही है।

जाको ऊपर बैठणो, जाको खेत निवाण।
जाको बैरी क्या करे, जाको मीत दिवाण॥

जिको खेतीखड़ बड़े आदमियां रे साथे उठे बैठे, जिण रो खेत नीचाण में होवे और जिके रो राजा रो दिवाण भायलो होवे वाँ रो वैरी क्यूं ही को बिगाड़ सके नी।

आंगन में गुनवंती जोय,
द्वार बैल दो जोड़ी होय।
जोत भर खेत थोड़े धनुरान,
कहना माने पूत सयान।

वनिया बढई लुहार चमार,

गांउ हरवहा होई वाजार।

बोवनिहार मिलै विनु रोक,

व्यवहार चलत होइ कछु थोक।

थोड़-वहुत हो अपने गाछ,

गाय दुधार होय दो वाछ।

कछु-कछु सेह होयं गोयडंत,

होइ सेवा कछु साधु-संत।

दया होय मन राम लगंत,

सुख से सोवैं खेतीहर कंत।

आंगणे में घर-गिरस्ती रे कामा में होशियार लुगाई होवे। दो जोड़ी बळदां री दरवाजे पर हो और जितना वे वा सके उतना बड़ा खेत बाने के लिये हो। छोटी सी बवुराई ? हो। बेटा समझदार और आज्ञाकारी हो। गांव में बाणिया, खाती, लुहार, चमार हो और हल बनाने वाला होवे। छोटा सा बाजार भी हो। बीज बीजने वाले भी जब चाहे तब मिलते हो। थोड़ा-बहुत वोपार भी हो। कुछ नगदो भी जमा होवे। थोड़ा-बहुत रूंख भी लगायेड़ा

होवे। गाय दूध वेती हो और उसके अपणो दो बहड़का भी होवे। छोटा सा खेत गांव रे कने भी होवे। साधु-संता री सेवा भी बनती रहे। मन में दया भाव भी हो और राम-नाम री लगन भी हो। इतरी सुविधा होवे तो खेतीखड़ सुख हूं नींद ले सकेला।

बांध कुदारी खुरपी हाथ।
लाठी हंसिया रखै साथ॥
काटे घास निरावे खेत।
पूरा किसाण वही कह देत॥

जो कसिया और खुरपी हाथ में राखे तथा लाठी और दांतियो भी कने राखे। घास बाढे और खेत रो नीनाण करतो रहवे वो ही खरो खेतीखड़ होवे है।

अगसर खेती अगसर मार।
कहे घाघ ते कबहुं न हार॥

जो सगळा हूं पहली खेत न बीजे है और लड़ाई में सगळा हूं पहल्या वार करै है वह कदेइ को हारे नी।

दुःखी - खेतीखड़

सांवण में सुसराळ गये, पो में खाये पूआ।
चैत में छैला पूछत डोले, तेरे कितना हुआ॥

सावंण में तो सांसरे चल्यो गयो और पो में माल-पूआ खाण लागग्यो। खेता कानी देख्यो ही कोनी। वो चेत में दूसरा न ही पूछसी कि थारे कितरोक धान होयो।

कर्महीण खेती करे, बळद मरै क काळ पड़ै॥

भाग फूटेड़ो खेती करे जद क तो बळद मर ज्याय क काळ पड़े।

खेती करे सांझ घर सोवै।
काटै चोर हाथ धर रोवै॥

खेती कर र जो खेतीखड़ रात न घर पर सोवे है, वाँ रो खेत चोर काट कर ले ज्यासी।

बळद

भारत रे समान गर्म और खेती प्रधान देश रे लिये बळद सगळा पशुआं हूं घणो मददगार है। हालांकि मारवाड़ री रेतोली धरती रे लिये ऊंट भी कम मददगार नहीं है। पण पुराणे जमाने में बळद हूं ही खेती रो घणो काम काढीज्यो। इये वास्ते बळद न ही पहल दीयेजे है।

हजारों साला हूं बळदा हूं ही काम लेणे रे कारण खेतीखड़ बळदा री नस्लां और उण रे स्वभावां री पूरी-पूरी जाणकारी हासिल करली और वीं जाणकारी ने अगली पीढी रे लिये छोटी-छोटी कहावतां रे रूप में छोड़ दी। ताकि वे आसानी हूं समझ सके और उण हूं फायदो उठा ले।

खेतीखड़ां री रुपये पैसों सम्बन्धी हालत वांरे हळां हूं नापीजे है। जिण खेतीखड़ रे खेत में एक साथ जितरा हळ जोतीजसी वीं रे अनुसार ही वींरो रुतबो आंकीजसी।

संस्कृत रे एक श्लोक में हळां न आधार मानर किसान

री सम्पन्नता (कितना धनी है) रो वर्णन करचो है।

नित्यं दश हळे लक्ष्मीर्नित्यं पंच हले धनम्।
नित्यं त्रिहले भक्तं नित्यमेक हले ऋणम्॥

अर्थात् जिण रे खेत में दस हळ नित जोतीजे वह खेतीखड़ लक्ष्मीवान है। पांच हळ वालो किरसाण धनवान श्रौर तीन हळां वालो खेतीखड़ पेट पाले है। पण एक हळ वालो तो सदा कर्जदार हो रहसी।

इसी श्लोक को गांवों वालों ने श्रपनी बोलचाल में इस प्रकार बणा लिया है--

दस हळ राव आठ हळ राणा,
चार हळों का वड़ा किसाना।

दो हळ खेती एक हळ वाड़ी,
एक वळद हूं भली कुदाली।

एक हळ हत्या दो हळ काज,
तीन हळ खेती चार हळ राज।

इण कहावत रो अर्थ ऊपर लिखेड़े श्लोक रे अर्थ हैं मिलतो जुलतो ही है।

वह किसान पातर । जो वरदा राखे गादर ॥

वह करसा कमजोर है जिण रे कने माठो बळद है ।

बिन बळदां खेती करै, बिन भायां रे राड़ ।
बिन महिला घर करै, चौवदह साख लवार ॥

बिना बळदा खेती करना, भायां बिना राड़ करनी और बिना लुगाई रे घर गृहस्थी चलाणी चाहे । वह खेती-खड़ चौवदह पीढ्यां रो झूठो है ।

घाछा बळद बहुरिया जोय,
ना घर रहे न खेती होय ।

जिण खेतीखड़ रो बळद छोटो होवे और घर में लुगाई घर रे काम धंदे नें नजाणनेवाली होवे, वीं रो न तो खेत जोतीजसी और न ही घर सम्मलसी ।

ताका भैंसा गादर बैल,
नारि कुलच्छनि बालक छैल ।
इनसे बचै चातुर लोग,
राज छाड़ के साधै जोग ॥

दो तरह री ओल्यां वालो भैंसो, माठो बळद, खोटे स्वभावां वाली लुगाई और शौकीन बेटे हूं स्याणा मिनख बंचता रहवे है। इण रे साथे हूं राज रो सुख भी मिले तो बीने छोड़र साधु होणो घणो आछो है।

वळद चमकणो जोत में, औ चमकीली नार।
अह वैरी है ज्यान रा, कुशळ करे करतार॥

हळ जोड़ते वखत चमकण वालो बळद और चटक-मटक वाली लुगाई—अह दोनों ही प्राण लेणे वाला है। इण हूं परमात्मा ही बचावे।

वळद भड़कणो और टूटी नाव।
ये कोई दिन दै हैं दांव॥

भड़कणो वळद और टूटेड़ी नाव कदे न कदे धोखो दे देसी।

बांधा वछड़ा जाय मठाय।
बैठा ज्वान जांय तोंदियाय॥

बांधेड़ो वाछो माठो हो ज्यावे है। बींया ही बैठ्यो रहण वालो जवान रे तोंद वढ ज्यावे है।

दांत गिरे औ खुर घिसे, पीठ बोझ नहीं लेय
ऐसे बुढे बैल को, कौन बांधि भुस देय।

जिण बळद रा दांत पड़ ज्याय, खुर घिस ज्या और पीठ पर बोझ लेइजे कोनी। इस्ये बुढे बळद न घ बांधर कुण चारो चरासी।

सींग मुड़े माथा उठा, मुंह रा होवे गोळ
रोम नरम चंचल करन, तेज बळद अनमोल

जिण बळद रा सींग मुड़ेड़ा होवे, माथो ऊंचो हों मूंडो गोळ होवे, बाळ नरम होवे और कान बार-बा हिलातो रहवे, बो तेज चालणे वालो और कीमती बळ होसी।

छोटा मुंह और ऐंठा कान।
यही बळद री हैं पहचान॥

छोटो मूंडो और मुड़ेड़ा कान होवे—आही आ बळद री पहचाण है।

पूंछ झप्पा और छोटे कान।
ऐसा बळद महनती जान॥

गुच्छेदार पूंछ और छोटे कान वालो बळद मह-
ती होवे है।

छोटे सींग औ छोटी पूंछ।
ऐसे को लेलो वे पूंछ ॥

छोटे सींगा वाले और छोटी पूंछ वाले बळद न
वेपूछ खरीदल्यो।

वळद लीजै कजरा। दाम दीजै अगरा।

काळी आंख्यां वाले बळद न अगाऊ मोल देयर
खरीदल्यो।

हिरन मुतान और पतली पूंछ।
बैल खरीदो कंथा वे पूछ ॥

जिके बळद री छुंगास करणो वाली नलो हिरण
की तरह पेट हूं चिपेड़ो होवे और पूंछ होवे पतली—इस्ये
बळद न हे स्वामी बिना पूछे मोल लेल्यो।

कार कछोटा झबरे कान।
इन्हें छाड़ि जनि लीजै आन ॥

काली काछ और बालों वाले कान रे बळद न छोड़र

री हाडियां पर एक लम्बा निशान) हो उसे देख कर लेणो में चूकना मत ।

वांसड़ औ मुंह धौरा, उसे देखि हरवाहा रौरा।

उठी हुई रीढ वाला और धोळे मुंडे रे बळद न देखर हाळी खुश होने लगा।

नासू करैं राजा रो नास।

नासू (जिण री पांसल्यां बरावर को होवेनी) बळद इस्यो अशुम होवे कि राजा रो भी सत्यनाश करदे है।

लम्बे लम्बे कान। और ढीला मुतान॥
छोड़ो-छोड़ो किसान। न तो जात है प्रान॥

जिके बळद रा कान लम्बा होवे और छंगास करने आली नळी ढोलो होवे तो हे खेतीखड़ इस्ये बळद न जल्दी ही छोड़ दयो नहीं तो मरणो पड़ेलो।

सात दांत उदंत को, रंग जो काळा होय।
इनको कबहू न लीजिये, राम चाहे जो होय॥

उदंत बळद सात दांतों वाला हो और थोंरो रंग काळो होवे तो वह कितना ही सस्ता मिलता होवे तो भी मत लेना।

मुंह का मोट माथ का महुआ ।
इन्हें देखि जनि भूल्यो रहुवा ॥

धरती नहीं हळाई जोते ।
बैठि मेड़ पर पागुरि करे ॥

जिके बळद रो मुंडो मोटो होवे और माथे रो रंग महुवे रे फळ रे रंग जिस्यो होवे । उण न देख सावधान हो ज्याणा क्यूंकि वह एक हळाई धरती भी दिन भर में को बावेनी । खेत की मेड़ पर बैठ कर उगाळी सारसी ।

मत कोई लेहु मसुरिहा वाहन ।
खसम मारि के डारै पायन ॥

जिके बळद रो डील लटकेड़ो होवे बीं ने मोल मत लेया । वह धणी न मारर पगां नीचे गिरा देवे है ।

बैल मसुरिहा जो कोउ ले ।
राज भंग पल में कर दे ॥

त्रिया बाल सारा छुट जाय ।
भीख मांगी के घर-घर खाय ॥

जो खेतीखड़ मसुरिहा बळद मोल लेता है । उण

रो वेगो ही सगळो ठाट-बाट खतम हो ज्यासी । टाबर-लुगाई छूट ज्यासी और घर-घर मांगतो फिरसो।

मसुरिहा = वह बळद होवे है जिके रो डोल लटकेड़ो होवे और पूंछ रा केश भी दो रंग रा होवे ।

बड़ सींगा जनि लीज्यो मोल ।
कूअे में नाखो रुपया खोल ॥

बड़े सींगो वाले बळद को मत मोल लेणा । भलांई रुपया कूअे में गेर देणा ।

छद्दर कहे में आऊं जाऊं ।
सद्दर कहे गुसैयें खाऊं ॥
नौदर कहे में नो देश ध्याऊं ।
हित कुटम्ब उपरेहित खाऊं ॥

जिके बळद रे छः दांत होवे है वो कहवे है कि वह तो कठै ठहर ही कोनी । सात दांतों वाला बळद कहता है कि मैं तो मालिक न ही खाज्याऊं हूं । नौ दांतों वाला कहता है कि वह तो नवों दिशाओं कानी दौड़े है । अर्थात् किरसाण रे सगा-सम्बन्धी, मायता और परिवार वाळों ने ही खा ज्यावे है ।

उदन्त बरदे उदन्त ब्याये ।
आप जाय या खसमै खाये ॥

जिकी गाय उदंत ही ब्याजाय और उदंत ही बच्चा जणे, वह या तो खुद जायली या मालिक न खतम कर देसी ।

कीकर माथा सिरस हळ, हरियाणे का बैल ।
लोधा हाळा लगाय के, घर बैठे चोपड़ खेल ॥

जिण किसान रे कनै कीकर रा पाथा, सिरीस रा हल और हरियाणे रा बलद होवे, वह लोधा को हाळी लगायर घर बैठ्या चौपड़ खेल सके है ।

ऊंट

देश रे रेतीले भू भाग में ऊंट बळद हूं काम काम रो को है नी। अठै खेती सम्बन्धी घणकरासा काम ऊंट री मदद हूं ही पार पड़े है।

रेल और तार रे चलण हूं पहले अठै बेगो समाचार पहूंचाणे रो साधन सांड्यां ही ही। एक-एक रात में सांढणी-सवार सौ-सौ कोसां ताई समाचार पहुंचा देता और ले आता।

आज तो ऊंट विना अठै खेती सम्बन्धी कोई सो ही काम पार को पड़ेनी। बलदां हूं बहुत ही कम काम लेइजे है। घणकरासा करसा भाई ऊंटा हूं ही खेत जोते है। घास-फूस भी ऊंटा रे गाडे हूं ही ढोवे है। बळदा री गाडी तो बहुत कम देखणे में आवे है। ऊंट घणो काम में आवे है। इणे कारण हूं ऊंट री नस्ल और वीं रा शुभा-शुभ लक्षणां रो भी जाणनो खेतीखड़ां रे लिये घणो जरूरी है। यां रो ध्यान ई' कानी गयो और यां अठै री बोलचाल

में ऊंट रे लछणां पर कई छोटा-छोटा ओखाणां री रचना करदी ।

अह् ओखाणां बळदा रे मुहावरां जिता पुराणा तो को है नी, पर ईं धरती रे लोगां रे वास्ते घणा जरूरी है—

ओछी गोडी नेस कड़ड, वहै उताले डगग् ।
वां ओठी वां करहला, आथण होसी अलग ॥

छोटी गोडी वाला और (कूंचळा दांत) निकळते नेस वाला ऊंट, जो उतालो डगां भर रह्यो है—उण ऊंट और ऊंट-सवार ने सांझ घणी दूर पर जायर होसी ।

तीखो मूंडो झवरा कान ।
श्याम रंग रो ऊंट जवान ॥

तीखै मुंडै और झवरा कान तथा काळै रंग रो ऊंट घणो आछो मानीजै है ।

१. लम्बो नस वालो ऊंट शुभ होवै है ।
२. चौड़ी छाती रो ऊंट शुभ और घणो बोझ उठाणे वालो होवे है ।
३. छोटै इडर रो ऊंट शुभ मानीजे है ।

४. छोटी पीड़ी रो ऊंट चोखो होवै है।

५. तीखो मूंडो और तीखा कानां रो ऊंट शुभ होवै है।

ऊंट मिठाई इस्त्री, सोनो गहणो शाह।
पांच चीज पृथ्वी सिरै, वाह बीकाणा वाह॥

ऊंट, सीरणी, लुगाई, सोने रो गहणो और साहुकार—अह पांचू सारे संसार हूं आछा होवे है। इवे वास्ते बीकानेर ने वाह वाह है।

मारवाड़ नर नीपजै,
नारी जेसलमेर।
तूरी तो सिंधा सांतरा,
करहल बीकानेर।

मारवाड़ में मिनख, जेसलमेर में लुगायां, सिंध में घोड़ा और ऊंट बीकानेर में घणा आछा होवे है।

१. तली उघाड़ ऊंट अशुभ होवे है।

२. ढोलणो ऊंट अशुभ होवे है।

३. बैठणे में आगला गोडा ढाळै जितो ही वेर लारला पगां हूं बैठणे में लगाये जद तो ठीक है। पण जको लारला पगां हूं बैठणे में जितो घणो वेर लगाये उतरो ही ऊंट

अशुभ मानीजे ।

४. जिके ऊंट रो इडर रगड़ीजै वो ऊंट काम रो को होवे नी । बीने लागटियो ऊंट कहवै है ।

५. संकड़ी वगला रो ऊंट आछो को होवेनी ।

ऊंट उठागळ नेशगळ ।
वहै उताळै वग्ग ।
इण ओठी इण ऊंठिया
आथण होसी अलग्ग ॥

उठणे में उतावलो, नेश निकलणे वालो और जिको लम्बे डग्गां हूं दौड़े । बीं ऊंट और ऊंट सवार ने आयण बहुत दूर जायर होसी ।

तीहाण हाण टोडरा ।
करु बखाण जोडरा ॥
निरखत लम्बै भोडरा ।
झिझक उठै झीवियो ॥
पग दो पागड़ै,
पच्चास कोस थागड़ै ।

बीजाई (जोताई)

जितरो गहरो बीजो बीज ।
उतरो ही चोखो फल लीज ॥

बीज जितरो ऊंडो बीजीजसी उतरो ही आछो फळसी ।

खेती तो थोड़ा करो, महनत करो सिवाय ।
राम करै वीं मिनखर, टोटो कदै न आय ॥

जिको भाई खेत तो थोड़ो बीजे, पण महनत घणी करे—इस्ये महनती मिनख रे घाटो कदेई को आवेनी ।

सब काम हळ पर । जो मालक सीर पर ॥

सारो काम हळ पर है । पर शर्त आ है कि मालिक खुद सीर पर काम करे ।

उत्तम खेती धणी सेती ।
मध्यम खेती भाई सेती ॥

निकृष्ट खेती नौकर सेती ।
बिगड़ गई तो बलाय सेती ॥

जिको खेतीखड़ खुद खेत में काम करे बींरी खेती सह हूं आछी होसी। जिके री खेती भाइयां रे भरोसे छोडेड़ी है बा मध्यम रहसी। पण जिको भाई नौकरां पर खेत छोड़ दियो बींरे पल्ले क्यूं ही को पड़ैनी, क्योंकि खेत बिगड़्यो इयेरी चित्या नोकरां न को होवे नी।

खेती धणियां सेती,
आधी कींकी, देखे जींकी।
बिगड़े कींकी, घर बैठ्यो पूछे बींकी॥

खेती पूरी बींरी ही होवे है जिको खुद खेत में काम करे है। आधी खेती बींरी होवे जिको खेत न आंख्यां हूं देखे है। बिगड़े बींरी है जिको घरां बैठ्यो ही खेती रा समाचार पूछतो रहवे है। अर्थात् खुद जायर खेत देखे कोनी।

जोतै खेत घास ना टूटै।
उणरा भाग सांझ ही फूटै॥

हळ हूं जदि घास जड़ समेत ऊपड़े नहीं तो इस्ये

किसान रो भाग फूटेड़ो ही समझो ।

बहुत करै सो और को, थोड़ो करे सो आपको ।

घणी जमीं बीजै बा औरा न लाभ पहुंचावे। क्यूं कि घणी खेती समप्णे में को आवेनी । पण थोड़ी बीजे बा आपरी होवे है क्यूं कि वो खुद साम्भले ।

खेती तो उणरी रही, जो हळ वावे हाथ।
उणरी खेती क्या रही, जो खेत कभी नहीं जात॥

खेती तो वीं ने ही फायदो पहुंचावे है जिको अपणे हाथां हूं हळ दावे । जिको खेत जावे ही कोनी वो खेती करे ही क्यूं ।

जेहि घर साळे सारथी, औ-तिरिया की सीख।
सावण में हळ बैल बिन, तीनों मांगे भीख॥

जिको साळे री सला हूं चालै, जिको लुगायां री सीख मानै तथा जिके कनै सावण में हळ और बळद को होवे नी वे तीनु ही भीख मांगसी ।

जे तूं दे तोड़-मरोड़ ।
हूं दयूं तेरी कोठी फोड़ ॥

बाजरी कहवे कि हे हाळी जदि तू मने तोड़-मरोड़ देती तो हूं इतरो होस्यूं कि थारो कोठलो में नावड़ूं ही कोनी।

वायर के हंसियो, बाकी है जद कसियो।

बीजर कांई राजी हुयो जद तांई नीनाण काढणो बाकी है।

हळ हाला, खेत पड़ाला।

हळ वो ही चोखो है जिके री हाळ मजबूत होवे। खेत बो ही आछो होवै जिके में पड़ाल होवे। (धोरे री ढाळ)

खास बात आ है कि जठै तांई हो सके बीज घणो ऊंडो बीजो। कारण ऊंडो बीज घणी गीली रेत में होणे रे कारण जल्दी ही उकळर जाय कोनी।

दूसरे कम गहरा ऊमरां में बीजेड़े बीज ने कमेड़्यां चुग ज्याय। धान री जड़ ऊंची होणे रे कारण थोड़ी सी ही मेह री खंच पड़ता ही वो धान उकळर चल्यो जाय।

तीसरे गहरो हळ लगाणे हूं घास, गंठियो और दूसरा पोधांरी जड़ां उखड़ जाणे रे कारण खेत में निनाण घणो को होवैनी। इं कारण हूं धान रा छोटा पोधां ने

जमी हूं खुराक पूरी मिलती रहवै ।

चौथे जदि फाड़ या चौक कर र ही बीजे तो थोड़ी बिरखा होणे पर भी खेत खाली को जायनी ।

पांचवे जमी कम बाओ । पण बाओ बीने गहरा हळ लगायर तथा चीर-चौक कर र ही बाम्रो तो घणो श्राछो रहवे । घणो वातां खेत खाली को जायनी ।

छठै जदि खेत ने पहिले हूं ही खाद गेरर, बोभा-बांठका बिछायर जठै-जठै जमीन कम उपजाऊ दिखाई पड़े त्यार करली जाय तो सारे खेत में एक सो ही धान लागै । नहीं तो खेत में कठै मूळां-बांठकां री जगां तो चोखो धान लाग ज्याय और बाकी रो खेत खाली पड़्यो रहवे। श्रापणी वेगार ही को बावड़े नी । इण हूं समझदारी इये में ही है कि जठै-जठै हूं खेत उडेड़ो होवे बठै-बठै चैत-बैशाख में ही ढीरा बिछांदयां तो बा में ओपरी रेत आयर ग्रटक जाय और धरती भी उपजाऊ हो ज्याय । इस्यो त्यार करेड़ो खेत छोटो ही चोखो । बिना त्यार करेड़ो खेत बडो ही क्यूं ही काम रो कोनी ।

सातवें खेत रो सूड़ मेह बरसण हूं घणो पहली करणो आछो को रहवे नी । कारण जकी रेत जेठ री आंध्यां ल्यावे वा बांठकां काट देणे रे कारण खेत में रुकै कायनी ।

उल्टी खेत री रेत उडर ओर चली जाय। इये कारण हूँ सूड़ हळ जोतणो रे साथे-साथे ही होणो खेत री उपज वास्ते घणो आछो रहवे। जदि श्रादम्यां री कमी होवे तो अळ-सोट तो पहले कदई नहीं करणो। काटेड़ा बांठका भी ओपरी रेत रोकणे रो काम कर सके है। जदि आंधी वाने उडायर दूसरां रे खेतां में न ले जाय तो।

असल बात आ है कि आपणे खेत री रेत उडर जाणी नहीं चाहिजे। उलटै नई रेत खेत में जमा होती रहणी घणी आछी रहवे है।

खाद

खाद खेत रो प्राण है। जिको खेतीखड़ खेत में खाद को देवे नी बीं री घणी सी महनत वेकार चली जावे है। आपणे अठै खेतां में खाद देणे रो रिवाज बहुत कम है। पण खाद खेती रे वास्ते घणी आछी है।

खाद पड़े तो खेत। नहीं तो कूड़ा रेत॥

खाद देण हूं खेती होवे है। बिना खाद क्यूं ही को होवे नी।

गोबर मैला नीम की खली।
यासे खेती दूणी फळी॥

गोबर, पखाना और नीम री खळ गेरणे हूं खेत री उपज दूणी हो ज्यावे है।

गोबर मैला पाणी सड़े।
जद खेती में दाण पड़े॥

आ खाद खास कर उण खेतां वास्ते है जिकां खेतां में पाणी री कमी को आवेनी। आपणे खेतां वास्ते तो साधारण खाद री ही जरूरत है, जको खाडे में गोबर और कचरो डाल र तैयार करे हैं।

खेती करै खाद से भरै।
सौ मन कोठिळा में लै धरै॥

खेत में नये ढंग हूँ खाद देयेड़ी होवे और मेह समय-समय पर बरसतो रहवे तो अनाज री उपज आशा हूँ घणी होवे।

जदि खेत गोबर और काली माटो री मिलेड़ी खाद हूं चोखी तरह तैयार करचोड़ो होवे तो एक लूंठी बिरखा होयां पछै खेती खाली को जावेनी। खेत उडै कोनी।

जिण रे खेत में पड्यो कोनी गोबर।
उण किसान न समझो जानवर॥

जिकै खेतीखड़ र खेत में गोबर री खाद बीजीजो कोनी, बीने बेअकल रो किसान ही समझणो चाहीजे।

खाद देस्या तो होसी खेती।
नहीं तो खेत में रहसी रेती॥

खाद देस्यो तो घणोसारो अनाज होसी। बिना खाद रे खेत री उपजाऊ माटी भी रहवे कोनी। खाली रेत ही पड़ी रहसी।

जायर नाखो गोबर खाद।
जद देखो खेती रो स्वाद॥

जदि खेत में गोबर री खाद नाखस्यो तो खेती करणे में आनंद भी आसी।

आसाढ में खाद खेत को जावे।
जद मूठी भर दाना पावे॥

आसाढ लागते ही जदि खेत में खाद लाग ज्याय तो मनचाही खेती करने रो आनन्द मिलसी।

गुंवार रा पता खेत में छोड़े।
तो मन चाही सिट्टी तोड़े॥

जदि गुवार रे दड़ में बाजरी बीजो तो मन चाही सिट्टी तोड़ लो।

खादै कूड़ा ना टलै, करम लिख्या टळ जाय।
रहीमन कहत बनाय के, देवो पास बनाय।

रहीम जी कहवे है कि भाग री रेखा टळ सके है । पर कचरे री खाद वालो खेत खाली को जायनी ।

सौ वार वाओ । न एक वार खताओ ॥

सौ बार बाणो हूँ एक बार खाद देयर बाणो बदतो रहवे ।

खाद करे उपाद

बीज रो तोल

जो गेहूं बीजो पांच पसेरी ।
मटर बीजो तीसा सेरी ॥
बीजो चणा पसेरी तीन ।
मक्का बीजो सेर तीन ॥
दो सेर मेथी दो सेर मास ।
डेढ सेर बीघा बीज कपास ॥
डेढ सेर बीघा तीसी नाओ ।
डेढ सेर बजरा बजरी बाओ ॥
पांच सेर बीघा मोठ गुंवार ।
तिल्ली सरसों अंजुली भार ॥
इण विधि बीजे बीज किसान ।
दूणे लाभ री खेती जाण ॥

जौ और गेहूँ एक बीघे में पच्चीस सेर बीजो, मटर एक बीघे में तीस सेर, चणा पन्दरह सेर, मक्का तीन सेर, मेथी और उड़द दो-दो सेर, कपास डेढ सेर, बाजरी डेढ सेर, मोठ गुंवार पांच-पांच सेर और तिल और सरसू तो लप भर ही बीजो। जदि किसान इये माप हूँ बीज बीजसी तो खेती दूणे लाभ री होसी।

रास पुराणी बाजरी, मेंढक फाल जंवार।
इक्कड़ दुक्कड़ मोठिया, कीड़ी नाल गुंवार॥

बाजरी रास और पुराणी री दूरी रैं हिसाब हूँ बीजणो चाहिजे। जुंवार मेंडको जती दूर कूद सकै विती दूरी पर बीजणी चोखी रहवै। मोठ बाजरी रै साथै छीदा-छीदा ही बीजणां आछा रहवै। पण गुंवार कीड़ै नाळ री तरह लगातार बीजणो आछो रहवै।

बोजाई रे वखत हाली नै बीज किती-किती दूरी पर बीजणो है इयेरो घणो ध्यान राखणो पड़ै है क्यूंकि

जाडो बीजणो ही चोखो कोनी और घणो छीदो बीजणो भी कामरो को होवै नी। कदै-कदै आली रेत होण रै कारण नाली रै आगै डाट आ ज्यायवै और ऊमरा रा ऊमरा खाली रह ज्याय। इये वास्ते हाळी नै वखत-वखत पर नाली नै ठरकातो रहणो चाहिजे। क्यूंकि ठरकाणै हूं रेत नीचै पड़ ज्याय।

बीजाई

बुद्ध बृहस्पति दो भले, सुक्र न भले बखान ।
रवि मंगल बूणी करे, द्वार न आवे धान ॥

हळसोतिये रे वास्ते बुध और गुरुवार रा दिन घणा आछा है । शुक्रवार रो दिन आछो कोनी । रवि और मंगल रे दिन हलसोतियो करने हूं अनाज की पैदावार को होवे नी ।

बुध वावणी अर शुक्र लावणी ।

बीजणो बुधवार हूं अ र काटणो शुक्रवार हूं शुभ रहे ।

भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय ।
ऊबर खाबर बीज द्यो, अन्न घणेरो होय ॥

भादवा सुदी छठ रे दिन अनुराधा नखतर पड़ता हो तो ऊंची नीची जमीन में भी बीज देस्यो तो भी अनाज

दूसरै सगळां धानारी बा रो वखत न्यारो-न्यारो होवै है। बाजरी री बा जेठ रै उजाळै पाख हूं लेयर आसाढ उतरै तांई ही रहवै है। इयेरै बाद बायेड़ी बाजरी जेठ में बायेड़ी बाजरी न को नावड़ै नी। इये वास्ते ही समजदार खेतीखड़ां में आ कहावत है कि जेठ री बाजरी और मोवी पूत भागवाना रै ही होवै है।"

मोठ गुंवार री बा वास्ते सावण रो महीनो ही खाश कर है। बींया तो मेह मोड़ो बरसै जद गोगे तांई मोठ-गुंवार री बीजाई करै है। पाछत बीजाई में धान जद ही होवै है जद पाछत बिरखा बरसै।

बाजरी रै साथै भी चतुर और समजदार खेती-खड़ कोई-कोई दाणों मोठ-गुंवार और तिलां रो भी मिलादे है। इनै तेड़ो कहवै है। तेड़ै रा मोठ गुंवार आछी बिरखा होणो हूं चोखा होवै है। पर झांझली आ ज्यांणै पर मोठ-गुंवार रा पौधा उकळ-उकळ चल्या जाय। बाजरी रा पौधा ही झांझली में जल्या भुज्या खड़्या रहवै है और बिरखा होता ही भट सिर सामलै है।

निनाण - काढणो

सावण भादों खेत निरावै ।
तव गृहस्थ घणो सुख पावै ॥

सावण-भादवे में जदि खेतां रो निनाण काढले तो अनाज आछो और घणो होसी ।

बांध कुहाड़ी खुरपी हाथ ।
लाठी दांती राखे साथ ॥

काटे घास निनाणे खेत ।
पूरा किसान वहि कहि देत ॥

कुहाड़ो और खुरपी हाथ में लेयर तथा दांतो और लाठी साथ में रखकर जो किसान घास काटकर खेत रो निनाण करतो रहवे है, वही खरा खेतीखड़ है ।

वायर के हंसियो, वाक़ी है जद कलियो ।

वायर कांई राजी हुयो जद नीनाण काढणो पड़चो है।

वायर के हंसियो, कस लेसी कसियो

बात साची है। आछी तरह धानरा निनाण्यां बिना किसान रै पल्लै क्यूं ही को पड़ै नी कारण ही आ कहावत बणी है। खाली बीज र छोड़ देणै हूं खेतीखड़ रै क्यूं ही हाथ को आवैनी। खर पतवार अर्थात् दूसरा घास वगैरा रा पौधा कस खींच लै और बीजेड़ो धान सूको ही रह इये वास्ते नीनाण समय पर करणो घणो नीनाण काढणै में बड़ी समझदारी और चतु जरूरत है। कारण मोठ-बाजरी और गुंवार रा छोटा पौधां रो दूसरा पौधां रै साथे कटणै रो व दबणै रो घणो खतरो रहवै है। ई खतरै हूं खातिर समझदार और महनती खेतीखड़ झूकेड़ा काडै, जकै हूं बानै धान रा छोटा-छोटा पौधा और बानै बचा सकै। इये वास्ते ही ई कहचो है कि 'कस लेसी कसियो।'